जीवनक कर्म जीवनक मर्म

जीवनक कर्म जीवनक मर्म

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

JEEVANK KARM JEEVANK MARM

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-93135-14-8
दाम: 200/- (भा.रु.)
सत्त्वाधिकार: © लेखक (श्री जगदीश प्रसाद मण्डल)
दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2021)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। सत्त्वाधिकारी अथवा प्रकाशक केर लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवारी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ

अनुक्रम:

सुदृढ़ जीवन

सुमन्त कक्काक जिनगी देखि गामभे माने सुखपुरमे किछु गोरेकेँ जहिना सिहन्ता होइ छैन तहिना किछु गोरेकेँ घृणा सेहो होइ छैन। किए किछु गोरेकेँ सिहन्ता होइ छैन आ किछु गोरेकेँ घृणा, से तँ अपन-अपन मनक विचार छैन तँए अनका मनक विचार आन केना बुझि सकैए, मुदा बुझनिहारो एक-पर-एक ओहन डॉक्टर जकाँ छथिए जे रीढ़क हड्डीमे जे मिसियो भरि पीब रहैए तँ ओकरा दूरबीन यंत्रसँ देखि ओहिना निकालि दइ छैथ जेना सी.आइ.डी. विभागक अफसर चोरक जड़ि ताइक चोरी पकैड़ लइए। खाएर जे जेतए अछि से तेतए रहह, अपना कोन मतलब तइसँ अछि। ने डॉक्टर छी जे जड़ि पकड़लासँ फीस भेटत आ ने सी.आइ.डी. अफसर छी जे दरमाहाक संग टी.ए. भेटत। अपना तइ सभसँ कोनो माने-मतलब नहि अछि। तखन तँ भेल जे बेकतीगत विचार सुमन्त कक्काक संग केहेन अछि।

सच बुझी तँ सुमन्त कक्काक जड़ियाएल विचार अपने अखनो धरि नहि बुझि पेलौं अछि। ओना, सुमन्त कक्काक संग बच्चेसँ छी। तेकर कारण अछि दुनू गोरेक घर एक्केठाम अछि।

जखन बच्चा रही तँ सुमन्त काका सियान रहैथ, तखन हुनकर सिनेह जे बच्चा सभपर रहैन, जइसँ टोलक सभ बच्चा हुनकर आदेशो मानैन आ अपने जे काज रहैन सेहो कऽ दैन तहिना अपनो रही जइसँ बच्चेसँ जे सुमन्त कक्काक लाट पकड़लौं से अखनो धरि ओहिना अछि जहिना बच्चामे धेलौं। ओना, सम्बन्धमे कमीसँ बेसी

भेबे कएल अछि। ओ भेल अछि चाह-पान खेने-पीने। सुमन्त काकामे एहेन गुण बहुत दिनसँ छैन जे चाह-पानक सभ ओरियान अपन दरबज्जेपर रखने छैथ। आ पहुँचते कहता जे हौ फल्लाँ असकताएल मन दुआरे बड़ी कालसँ ने चाह पीलौं अछि आ ने पान खेलौं अछि, भने तूँ आबि गेलह। करह ओरियान।

सुमन्त काका मोहनी मंत्र चलबै छैथ आकि अपन अधवेसू जीवनक असकताएल मनक ताप, से तँ वएह जनता मुदा अपना हुनकापर जेते मन खुशी रहैए तइसँ बेसी तामस सेहो उठल रहैए। मुदा से अपन मनकेँ बुझा-सुझा मना लइ छी जे सुमन्त काका किछु छैथ तँ पड़ोसी छैथ। जँ दुनू गोरे मिलानसँ रहब तँ कहियो घर-घराड़ी जमीनक सीमा खातिर झगड़ा नहि हएत। कहब जे किए मन खुशी रहैए आ किए तामस उठैए? अपने ओहन लोक छी जेना दुनियाँक लोक छैथ। एक दिस देखै छी जे पएरे चलैक बदला साठि किलोमीटर चलैबला सवारी भऽ गेल अछि। जैठाम घन्टामे एक कोस चलै छेलौं तैठाम बीस कोस चलए लगलौं, तइसँ किनको दुख-सुख बुझैक एते समय नहि अछि जे निचेनसँ एकठाम बैस दुख-सुखक मुँहमिलानी करब। मोटर साइकिलपर बैसल रहै छी, कानमे मोबाइल फोन लगौने रहै छी आ गप-सप्प करैत रहै छी। तँए कहब जे एहेन लोक नहि छैथ जे भरि-भरि दिन टी.वी., कम्प्यूटर खोलि क्रिकेटे-शतरंज नहि देखै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। अखनो एहेन अछिए जे सबेर-सकाल, माने दस बजेमे स्नान-भोजन कऽ ताशपर बैस जाइ छैथ आ साँझमे जखन चाहक तलक लगै छैन तखन खेलसँ उठै छैथ। भाय, दुनियाँ छी, जाबे धरम-करम अछि ताबे पतन-करम सेहो रहबे करत। तेतबे किए कहबै, जाबे ज्ञानक इजोत रहत ताबे अज्ञानक अन्हार सेहो रहबे करत। मुदा तइ सभसँ अपना कोन मतलब अछि। अपन मतलब

अछि जे सुमन्त कक्काक विचार जहिना सोझराएल रहै छैन तहिना घुड़छियाएलो रहिते छैन। सोझराएल विचार देखि खुशीसँ मानि खुशी होइ छी आ जे घुड़छियाएल विचार रहै छैन, जेकरा अपने बुझैक बदला आरो घुड़छिया जाइ छी तखन तामस उठैए। यएह कारण अछि सुमन्त कक्काक ऊपर तामस आ खुशीक।

परसू साँझमे एकटा बिहाड़िक झोंक उठल। माने गोसाँइ डुमैकाल उत्तर-पच्छिम कोणसँ बिहाड़ि उठल, केते गोरे बजला जे भण्डार कोणक बिहाड़ि छी, अपने की बाजब से फुरिये ने रहल छल। किए तँ अखन तक मन यएह मानि रहल अछि जे समुद्रसँ जुआरि उठैए। ओना, चैत-बैशाख मासमे पच्छिम-उत्तर कोणक बिहाड़ि सेहो उठैत देखिते आबि रहल छी, मुदा अपना ऐठाम एहनो तँ कहल जाइते अछि जे 'जे भोज नहि खाइ, तइमे पारा मरौ।' तहिना अपने जखन भूगोलक शिक्षक बनि विद्यालयमे पढ़बै नइ छी, तखन ओइ सभसँ माने भूगोलसँ मतलबे किए राखब।

बिहाड़िक झोंक शुरूमे कनियेँ बुझि पड़ल तँए बेसी सावधान होइक जरूरत मनमे उठबे ने कएल। बिहाड़िये छी, जहिना आएल तहिना जाएत। मुदा से भेल नहि, चारू भरक गाम सभमे सुनए लगलिऐ जे लोक सभ हल्ला करैत बाजि रहल छल जे 'दानो एलौ, दानो एलौ, लाबै जो लाठी आ रेबाइरकऽ भगा नइ तँ घर-दुआरक कोनो ठेकान नहि रहतौ.!' सएह भेबो कएल, गामक लोक लाठी लऽ कऽ खूब हल्ला करैत दौड़ल। अपना गतिये बिहाड़ि उठल छल आ अपना गतिये शान्त भऽ गेल। मुदा मनमे ओझरी लगि गेल जे बिहाड़ि लाठी हाथे भगौने भगल आकि हवे-वसात छल, आएल आ गेल? मनमे कोनो थाहे ने लगए जे की भेल। सुमन्त काका एहेन-एहेन प्रश्नकेँ गप्पक चुटकी जकाँ तेना सोझरा दइ छैथ जे नहियोँ मानैबलाक मन मानियेँ जाइ छैन। विदा भेलौं सुमन्त कक्काक ऐठाम

जे अखने किए ने पुछि कऽ नीक जकाँ बुझि ली। जहिना मनमे जिज्ञासा उठल तहिना शान्त भऽ विलीन सेहो भऽ जाएत। ओना मनक उद्वेग तेते जोर मारलक जे बुझैक जिज्ञासा आरो बढ़ि गेल। मुदा लगले अपने मनमे विचार उठि गेल जे अखन जँ सुमन्त काका ऐठाम जाइ आ ओ जँ कोनो काजमे बाझल होथि तखन हुनका बरदा कऽ पूछब नीक नहि.! गप्पे-सप्प छी, एकर कोनो जड़ि-पालो अछि। खरहीक गाछ जकाँ पन्ना-मे-पन्ना छुटैए। मुदा समय दिस जखन नजैर उठेलौं तँ बुझि पड़ल जे सुमन्त काकाकेँ चाह पीबैक बेर छैन, अखन ओ चाह पीबैले बैसल हेता। धड़फड़ा कऽ विदा भेलौं। ओना, दुनू गोरेक घर एक्केठाम अछि मुदा हुनकर दरबज्जा उत्तर-मुहेँ छैन आ अपन दरबज्जाक मुँह दच्छिन-मुहेँ अछि, तँए एकठाम घरक सीमान रहितो कनी दूर तँ भइये गेल अछि। परिवेशो एहेन बनियेँ गेल अछि जे पड़ोसीक कोन गप्प जे परिवारक भीतर दुनू परानीक (पति-पत्नीक) बीच सेहो जीवनक दूरी बनियेँ रहल अछि।

एक गोटा जइ सम्प्रदायक छैथ दोसर गोटा तइसँ भिन्न दोसर सम्प्रदायक भऽ जाइ छैथ। सभ सम्प्रदाय अपना-अपना ढंगसँ जीवनक धार प्रवाहित करिते अछि। तैसंग मनमे ईहो रहिते छैन जे सभसँ नीक सम्प्रदाय अपन अछि बाँकी सभ अधला।

संयोग नीक रहल, सुकृत्या काकी जाबे चाह लऽ कऽ आँगनसँ निकैलतैथ तइसँ पहिने अपने पहुँच गेलौं। जे सुकृत्या काकी सेहो देखि लेली। दरबज्जापर पहुँचते बजलौं-

“गोड़ लगै छी, काका.!”

आने दिन जकाँ सुमन्त काका असीरवाद दैत बजला-

“खूब दनदनाइत चलह भातीज।”

मने-मन सुमन्त काकापर तामस उठि गेल। तामस उठैक कारण भेल जे बिनु बुझने-सुझने सुमन्त काका असीरवाद किए एहेन दऽ देला.? जहिना अन्नकेँ सूरा तरेतर खा जाइए, कागज-किताबकेँ दीमक खा जाइए तहिना अपन मनकेँ चिन्ताक दीमक तेना चाटि रहल अछि जे जीब कठिन भऽ गेल अछि आ तैठाम सुमन्त काका असीरवाद दइ छैथ जे खूब दनदनाइत चलह। से हुनका अपना सन असीरवाद देब भेलैन। मुदा चाह वा कोनो अम्मलक तृष्णा जहिना मनकेँ लरगुज बना दइए तहिना अपन मन लरगुज भऽ गेल। किछु ने बजलौं।

दू गिलास चाह छिपलीमे नेने सुकृत्या काकी दरबज्जापर पहुँचली। चाह देखि सुमन्त काका बजला- "छुधानन, भनसियाक हिस्सा तूँ पीलहून।"

सुमन्त कक्काक मन मानि गेल छेलैन जे पत्नी दू गिलास चाह दुनू परानी ले बनौने हेती, तइ बीचमे छुधानन पहुँचल अछि। अखनो मिथिलाक महिलामे ई गुण पूर्ण जीवित अछिए जे अकलबेरामे सेहो, अकलबेरा भेल जइ काजक समय ससैर गेल, जँ कियो अतिथि-अभ्यागत दरबज्जापर अबै छैथ, तखन पुरुखक हिस्सामे तँ कटौती नहि होइ छैन, तेकर कारण सोझो-सोझी भेल, मुदा महिला अपन हिस्सा काटि अतिथि-अभ्यागतक मान-सम्मान रखिते छैथ। ओना, सुमन्त कक्काक नाड़ीक, नाड़ी भेल जीवित जिनगीक गति, पता अपनो अछिए जे गहींरगर पोखैर जकाँ, जइ पोखैरमे अथाह पानि रहितो थीर रहैए, काका तहिना छथिए। भुतही-बलान धार जकाँ नहि जे अपन पेट बालुसँ भरल अछि मुदा ठेहुनो भरि पानिक धाराक वेग आनि सभकिछुकेँ खसा-पड़ा कऽ जान तक लऽ लइए। सुमन्त काका अथाह पोखरिक पानि जकाँ सदिकाल असथिर रहिते छैथ। अछींजलक घाटसँ, माने भेल जइ

घाटपर सँ पूजा लेल अछींजल पानि भरल जाइए, लऽ कऽ माल-जालक गोंत-गोबरकेँ धुअए-बला घाटक संग लोकक नहाएबसँ लऽ कऽ मल-मूत्र धरि धोइक घाट सेहो छैन्हे। बजलौं-

"काका, काकी आगामी लोक छैथ, ओ एक-आध गिलास चाह हमरा सन-सन हेराएल-भोथियाएल लोक ले बेसी कऽ बनैबते छैथ, तखन अपन हिस्सा पीलौं आकि काकीक हिस्सा पीलिऐन?"

ओना, सुकृत्या काकीक मन अपने बौआइत-ढहनाइत रहैन जे अपन सेवासँ जँ कनियोँ किनको मनमे तृप्तिक तृप्ति होइ छैन, तँ वएह ने मनुक्खक मानवीय मूल वृत्ति भेल। हमर विचारकेँ सुमन्त काका मने-मन जेठुआ बरखा जकाँ जेना चाटि गेला तहिना किछु ने बजला। मुदा सुकृत्या काकी बजली-

"अपना ले चाह अछिए। आ जँ नहियेँ रहैत तँ की होइतै। चुल्हि पजरले अछि, फेर बना लैतौं।"

समयकेँ दुरि होइत देखि आकि अपन कोनो काजक धड़फड़ी मने-मन देखि सुमन्त काका बजला-

"आन दिन जइ समयपर छुधानन अबै छेलह, तइसँ हटल समयपर देखै छिअ, किछु विशेष बात की?"

सुमन्त कक्काक विचार सुनि मनमे उठल जे भरिसक हुनकर कोनो काज पछुआएल छैन, तइ धड़फड़ीमे छैथ, मुदा ईहो लूरि तँ काकाकेँ छैन्हे जे कोनो काज माने जीवनक मूल तात्त्विक काजकेँ कहियो मरए नहि दइ छैथ। एक तँ अपन ओहन जीवनक कर्मशीलताक क्रियमान लूरि छैन जे जीवनक हर जीवित पहलूकेँ माने क्रियाकेँ जीवनसँ जोड़ि अमृतत्वक घोंट पीआ पालै छैथ, जे मृत्युक सम्भावने ने रहै छैन। जँ कोनो भूल-चूक वा आपैत-विपैत भइयो जाइ छैन तँ तेकरा ओ प्रकृत प्रदत बुझि मुकाबला करै छैथ।

..बजलौं-

“काका, ओना घरपर सँ एक्केटा विचार लऽ कऽ चलल छेलौं, मुदा ऐठाम आबि एकटा विचार आरो उपैक गेल, तँए दूटा विचारक विचार पूछए चाहै छी।”

अपन काजक हाजिरी दैत सुकृत्या काकी सेहो बजली-

“भने अखन दुनू बापूत छी, माने चाचा-भातीज, तँए हमरो काज नीक हेबे करत।”

काजक भार देखि आकि काज करैक मनक झोंक उठने सुमन्त काका बजला-

“एते भूमिका बन्हैक कोन काज अछि। असथिरसँ बाजू। भेल तँ एतबे ने जे अपन काज कुसमयेमे बदैल गेल। चाह पीबिये लेलौं कनी पान खुआ दिअ। आ जेते जे मनमे औक-वमन अछि जइसँ मन हदमदाए नहि, ओकरा वमने कराएब नीक हएत।”

सुकृत्या काकीक विचार दिस बढ़ैत देखि सुमन्त काकाकेँ अपना दिस मोड़ैत बजलौं-

“काका, ऐसँ नीक समय बाढ़िये मासक होइए, जे लोक खराँतक अन्न खेबो करैए आ छुतेबो करैए आ उनटाकऽ खराँतकर्ताकेँ गरियेबो करिते अछि।”

अपना जनैत जे बाजल छेलौं, तइ बुझैमे सुमन्त काकाकेँ भेद भऽ गेलैन जइसँ मनक गम्भीरता एने मुँहक रूप बदैल गेलैन। ओना, बजैक मन हेबे करैन जे किए ने छुधाननकेँ कहि दिऐ जे जहिना लोक अपन जिनगीकेँ अपने बिगाड़ि अनकर दोख लगबैए तहिना जेकरा सरकारी बुझै छी ओ अपने छी। जीवनक लेल संस्थाक जरूरत होइते अछि। मुदा से बजला नहि, प्रश्नकेँ पतियानी लगबैत पत्नी (सुकृत्या) दिस देखैत बजला- “अहाँ तँ घरक लोक

छी, तँए पहिने छुधाननक विचार विचारि लेब उचित हएत?"

ओना सुकृत्या काकीकेँ मनमे जेते तृप्ति सुमन्त कक्काक विचारसँ नहि भेलैन तइसँ बेसी तृप्ति, आने स्त्रीगण जकाँ अनकर घरक अकची-दोकची सुनैले भेलैन। जहिना सुकृत्या काकी आँखि ठाढ़ केलैन तहिना कान सेहो ठाढ़ करैत पतिक जवाब सुनैले तैयार भेली। ओना, सुमन्त कक्काक मनमे ईहो उठैत रहैन जे जहिना घर-अँगना वा रस्ता-पेराकेँ बाल-बच्चा हगनी-मुतनीसँ बाधित करैए मुदा तेकरा चेतन माता-पिता एक मुट्ठी छाउर वा एक मुट्ठी माटि दऽ झाँपि अपन रस्ताकेँ बाधित नहि हुअ दइ छैथ तहिना पत्नीक प्रश्नपर एक मुट्ठी माटि वा छाउर छिड़िया कहि दिऐन जे वेद भेद बुझब छी। बजैक क्रममे लोक भेदकेँ वेद कहि भेदिया दइए। मुदा वेदक मूल रूप भेदकेँ वएह बुझै छैथ जे जीवनक भेदक शील शालीनताकेँ बुझै छैथ। मन मारि सुकृत्या काकी दुनू गोरे, माने सुमन्तो काका आ छुधाननोक बीच बैस गेली। ओना, सुकृत्या काकीक मनमे ईहो विचार उठैत रहैन जे जखन दुनू प्राणीक बीचक बात छी तखन अनेरे धड़फड़ेबे किए करब। दिन-राति एकठाम रहबाक अछि। जिनगीक कोनो आदि-अन्त अछि जे केते दिन जीब आकि नहि जीब। शेष जिनगी तँ बाँकीए अछि। तइले अचेत किए बनल रहब। किए ने सचेत बनैक दिशामे बढ़ब।

सुमन्त काका बजला- "छुधानन, ऐठाम एलापर जे प्रश्न भेटलह, पहिने सएह बाजह?"

अपने जेना बरहबर्खा फल नारियल जकाँ फल भेट गेल हुअए तहिना तिरपित होइत बजलौं- "काका, अहाँ असीरवाद देलौं जे दनदनाइत जीबह, से केना?"

परवा-पौरुकी जकाँ सुमन्त काका मने-मन घुटकए लगला, मुदा अथाह रूप माने जीवनक विराट रूप देखि मन घुमि गेलैन।

विराट रूप की? ऊपरसँ मनुक्खक साढ़े तीन हाथक शरीर सभ देखबो करै छी आ बुझबो तँ करिते छी जे एहेन शरीरक काज की छी। ऐठाम भेद अछि। एक देखब ई भेल जे शरीरक बाहरी रूप देखलौं आ दोसर भेल शरीरक भीतर विराट रूपकेँ देखब। शरीरक भीतर केतेक अणु-परमाणु इत्यादि अछि तेकर की शक्ति छै। खाएर जे अछि जेते अछि तइसँ सुमन्त काका आ छुधाननकेँ कोन मतलब छैन। मतलब छैन अपन दिनानुदिनक जीवनसँ। अनभुआर अनाड़ी जकाँ सुमन्त काका बजला-

"से की छुधानन?"

बजलौं-

"काका, तेहेन कोरोना बेमारी दुनियाँमे पसरल जे कनियोँ जँ हुसि जाइत तँ दुनियेँ लोप भऽ जइतै, माने दुनियेँ मेटा जाइत। मुदा से लोक चेतलक।"

अपन विचारक प्रवाहमे आकि सुमन्त काका अप्पन मनक विचारक प्रवाहमे, बजला-

"भने कलयुगक अन्त भऽ जाइत, छुधानन। हवे-बिहाड़िमे कलयुग चलि जाइत आ सतयुग चलि अबैत। मुदा से रोकनिहारक बुड़िबकी छी किने। वएह सभ ने, माने जे सभ दुनियाँकेँ बचौलक, धरतीपर सतयुगकेँ एबासँ सेहो रोकलक।"

सुमन्त कक्काक विचार कोनो भाँजपर चढ़बे ने कएल। किए तँ अखन तक अपनो यएह बुझै छी जे सतयुग, त्रेता, द्वापर आ कलयुग चक्र गतिसँ चलैए। केते सतयुगो बीतल, केते त्रेतो बीतल। फेर जखन मने-मन विचारी जे गतिशील दुनियाँ अछि ओ आगुए मुहेँ चलैत रहत, पाछू घुमि नहि ताकत। तखन मन बगैद जाए। किए तँ भाँजपर चढ़बे ने करए जे जखन आगू मुहेँ दुनियाँ गतिशील

अछि जइसँ सतयुगक ओ आदिम समाज मेटाकऽ कलयुगक वैज्ञानिक समाज बनि गेल, मुदा तखन उनैट कऽ फेर ओ जंगली रूपमे केना बदलत? अन्तो-अन्त मनक विचारक फरिछौठ नहियेँ भेल। जइसँ मन अकछए लगल। अकछाइत मने बजलौं-

“काका, कोन दुनियाँक फेड़मे पड़ै छी, ओ जहिना जीव-जन्तुक संग मनुक्खकेँ जन्म दइए तहिना सभकेँ चाटि-पोछि कऽ खा पेटेमे पचाइयो तँ लइते अछि।”

अपना जनैत सुमन्त काकाक मनकेँ दुनियाँ दिससँ मोड़ि अपना दिस आनए चाहै छेलौं से भेल नहि। दुनियाँक ओझरीमे ओझरा सुमन्त काका सोझरबैत बजला-

“छुधानन, जहिना दुनियाँ लोककेँ ठकैए तहिना लोको दुनियाँकेँ ठकिते अछि। तँए ठक सबहक फेड़ामे अपना सभ किए पड़बह।”

सुमन्त काका अपना मने की बजला से अपने मने ने अपनो बुझबो करता किने। तैसंग मनमे ईहो उठि गेल जे एहनो विचारक चलैन तँ समाजक वातावरणमे अछिए जे दुनियाँ ओहन दुनियाँ छी जइमे धर्मात्मा सेहो छैथ आ पापात्मा सेहो अछि। इमानदारो छैथ आ बेइमानो तँ अछिए। तहिना चोरो-चहार अछि आ सन्तो-सन्यासी तँ छथिए। तैठाम एकहरफी सभकेँ ठके केना बुझब। फेर अपने मनमे उठल जे लत्ती गाछ जकाँ जे मुड़ी-सँ-मुड़ी छोड़ैत चलब तखन एक जड़ि रहितो मचानपर चतैर जाएब। जइसँ अपन जे जड़िक प्रश्न अछि ‘दनदनाइत जीबैक’ से तर पड़ि जाएत। सुमन्त कक्काक विचारमे मोड़ दैत बजलौं-

“काका, अनेरे किए समयकेँ दुइर करब। अपने जे दनदनाइत जीबैक असीरवाद देने छेलौं, तइमे साल भरिक बीच अपन दशा की

भेल अछि, तेकरा बिनु बुझने अपने बाजि देलिऐ।”

ओना, सुमन्त कक्काक मनमे खढ़ो भरि दुख तेकर नहि भेलैन। जे छुधानन एहेन बात किए बाजल। उनटे मनमे उठि गेलैन जे किए ने दू-दिशिया दुनियाँक परिचयसँ छुधाननक मुँह मीठा दिऐ जे अपने दनदनाइत जीबैक बाटक बात पकैड़ लेत। जइसँ हँसैत-खेलैत जीवनक बाटकेँ बाते-बातमे टपि जाएत। सुमन्त काका बजला-

“छुधानन, दुनियाँ विचित्र बनि गेल अछि। एक चित्र जँ रहैत तँ बुझैमे थोड़ेक असान होइत, मुदा से अछि नहि।”

सुमन्त कक्काक विचार जेना हृदयकेँ छेद देलक जइसँ छलमलाहट उठल, बजलौं-

“से की काका?”

जएह विचार सुमन्त कक्काक मन बजैले उत्प्रेरित करैत रहैन सएह बात भरिसक हमहूँ पुछि देलिऐन। ई भाँज सुमन्त कक्काक बिसवासू बोलक स्वरसँ बुझि पड़ल।

अखन धरिक साठि बर्खक जीवन सुमन्त कक्काक ओहन रहलैन जे सइयो धार्मिक सम्प्रदायक बीच, सइयो जाइतिक बीच आ सइयो पेशासँ जुड़ल पेशेवरक बीच जीवनक एक दिशा रहलैन, जइसँ मनमे एते बिसवास बनियेँ गेल छैन जे जीवन केना जीवन बनि जीवित रूपमे चलैत चलत। सुमन्त काका बजला-

“छुधानन, सृष्टिक रचने दू दिशामे भेल अछि। एक दिशा छी अद्वैत आ दोसर दिशा छी द्वैत। रोग अहीठामसँ पकैड़ लेने अछि।”

सुमन्त कक्काक विचार सुनि अपन मन ओइ रोगी जकाँ मानि गेल जे भदवरिया पटुआ सागक गुण बुझि अपन कफक बेमारीक बात अपने बुझैए। तहूमे राति-के भातक संग खेलहा तँ आरो बेसी

बुझैए। बजलौं-

"काका, लोको जीबै दिअए तखन ने निचेनसँ जीब। तेहेन लॉक-डाउनमे पड़ल छी जे सौंसे घरक तलासी भऽ गेल।"

हमर बात सुनिते सुमन्त काका बजला किछु ने मुदा मुँह दाबि हँसला नहि सेहो हँसबे केलाह। ओना, मनमे ईहो उठैत रहैन जे स्वतंत्र जीवन की छी, से छुधाननकेँ बुझा दिऐ। किए तँ भविष्यक निर्माण अपन विचारानुकूल तखन ने हएत जखन स्वतंत्र रूपसँ ओइ दिशाक नीव पड़त। मुदा बजला किछु नहि।

❑

शब्द संख्या : 2587, तिथि : 14 नवम्बर 2021

सागवानक बागवानी

मिथिलाक गाम अखनो गाम छीहे, भलेँ जइ रूपमे गामकेँ बुझै छी तइसँ किछु बदलल रूपमे किए ने भऽ गेल हुअए।

साँझू पहर-के हमरासभक बैसार भविसलाल काका ऐठाम सभ दिन होइए। भविसलाल काका कर्मनिष्ठ लोक तँ छथिए जे उदार सेहो छैथ। जहिना भविसक आशामे कर्मनिष्ठ लोक उदार बनि कोनो उद्यमकेँ अपनबै छैथ तहिना भविसकाल काका सेहो अपनौने छैथ। ई अपन एकदिना जिनगी बना जीबै छैथ जइसँ आमद-खर्चक हिसाब लिखैले बही-खाता वा डायरीक जरूरत नै पड़ै छैन। कक्काक बान्हल जीवन रहने शरीरोमे एहेन गुण आबिये गेल छैन जे चाह पीबैबेर चाहक तृष्णा, खाइबेरमे खेबाक तृष्णा आ सुतैबेर सुतैक तृष्णा जहिना अपने जागि जाइ छैन तहिना गप-सप्पक बेर गप-सप्पक तृष्णा सेहो जगिते छैन। बान्हल जीवन, तँए बान्हल आमदनी रहने भविसलाल काका खेबा-पीबाक पूर्ण आजादी रखने छैथ। जइसँ ने कहियो मुँहदुस्सी रोग पकड़लकैन जे फलतुआ सभ चाह-पान खाइ दुआरे दरबज्जापर अबैए आ ने चाह-पानक कोनो हिसाब बे-हिसाब भेल छैन। तहूमे समयक संग तेना बहि गेल छैथ जे चाह बनैक इंजन तक लगेमे रखने रहै छैथ। तैसंग रोटी बनबैबला आ तरकारी-दालिबला सेहो छैन्हे मुदा तेकरा सभकेँ कातमे रखने छैथ, निर्धारित समयपर ओहो मशीन सबहक उपयोग करै छैथ।

संयोग एहेन भेल जे हम पहिने पहुँचलौं आ बसन्तलाल भाय कनी पाछू-के पहुँचला। पहुँचते बसन्तलाल भाय बजला- “काका, अपनेक विचार बीस सालक पछाइत आब बुझिमे आएल। जँ ओइ दिन बुझने रहितौं, माने बीस बर्ख पूर्व, तँ औझुका पछताबा नइ होइत।”

बसन्तलाल भाइक बात हमहूँ सुनलौं आ पाँच-छह गोरे आरो जे बैसल रहैथ सेहो सभ सुनलैन आ भविसलाल काका तँ सुनबे केलाह। ओना, भविसलाल काकासँ सम्बन्धित विचार छल तँए अपन मन मनाही केलक जे बीचमे किछु बाजब उचित नहि। मुदा कोनो धारक पानि जहिना असथिर गतिये चलैए आ कोनो तेजो गतिये सेहो चलिते अछि जइमे पैसला पछाइत जहिना अपन सुधि-बुधि बदैल जाइए तहिना अपनो सुधि-बुधि बदैल गेने बजा गेल-

“बसन्त भाय, अहाँ तँ पचीस साल पुरान स्नातक छिऐ, माने बी.ए. पास, तखन जे बीस साल पहिलुका केलहाक पछताबा आइ किए भऽ रहल अछि?”

ओना, भविसलाल काका सेहो आँखि उठा देखलैन। जइसँ जहिना ओ नजैर देलैन तहिना अपनो नजैर हुनकर नजैरकेँ देखि लेलक। जइसँ बुझि पड़ल जे भविसलाल काका किछु मोन पाड़ि रहला अछि। किए तँ बीस साल पहिलुका गप छी। तैबीच कोसी-कमला धारक केते पानि बहिकऽ समुद्रमे चलि गेल। अपनो जीवनमे हजारो-लाखो विचार उठले हएत, जइमे किछु क्रियोगत भेल हएत आ किछु ओहुना निवंशो मरले हएत।

बसन्तलाल भाय पचीस बर्ख पहिने बी.ए.पास केने छला। सात भाए-बहिनक बीच बसन्तलाल भाय असगरे भाँइमे। नीक विद्यार्थी, नीक सोभाव सभ दिन रहलैन, जइसँ अपन छबो छोट

बहिनकेँ बेवहारिक जीवन जीबैक लूरि नीक जकाँ सिखा देलखिन। परिवार कोनो हुअए मुदा समाजक जे रूप महिलाक लेल बनि गेल अछि ओ कुदरूप भइये गेल अछि। ओइ कुदरूपताकेँ वएह महिला धोइ सकै छैथ, जिनका अपन जीवन आ जीवनक प्रति अटूट बिसवास बनि गेल होनि। जे अपन जीवनकेँ अपना हाथ-मुट्ठीमे राखि आगूक समयक संग चलैक लूरि सीखि नेने होइथ..। यएह सोच बसन्तलाल भायकेँ अपन बहिन सबहक प्रति रहलैन तँए बहिनो सभ एक-सँ-एक अपन परिवारकेँ सम्हारि चलिते छैन। जइसँ सभ बहिनक अपन-अपन ओहन पारिवारिक जीवन बनि गेल छैन जइमे एक्के चुल्हि-चौकापर बैस सभकियो खेबो-पीबो करैए आ अपन-अपन काजक दौड़ पकैड़ सेहो चलिये रहल अछि।

आजुक समाजमे जे महामारी रोग मनुक्खमे पकैड़ रहल अछि ओ श्रमहीनक दिशामे ढरकब छी। जइसँ मनुक्खक बीच हजारो रोगक जन्म हेबे करत। जखने से भेल तखने आधा-आधी मनुक्खक मृत्यु महामारीसँ हेबे करत। तइले ते लोक अपने ने चेतत। कियो जँ चेतौनी देबे करतैन लेकिन करत तँ लोक अपने मने।

बसन्तलाल भाय भविसलाल काका दिससँ मुँह घुमा हमरा दिस करैत बजला-

"हौ बतहू! भविसलाल काकाकेँ सभटा बुझल छैन, तहूमे तेहेन मोन रखैक यादास्त शक्ति छैन जे हम सभ कोनो बात बिसैर जाइ छी आ हिनका मोने रहै छैन। मुदा अखन मोन पड़ि गेल हेतैन जे जहिना तीस साल पूर्वक मन आबि कहए लगै छैन जे फल्लाँ इस्वीमे हाइ स्कूलमे रही आ लोकक बाड़ी-झाड़ीक आम-लताम तोड़ि-तोड़ि खाइत रही।"

ओना, भविसलाल कक्काक मन बीस साल पहिलुका विचारमे

जरूर घुमए लगलैन मुदा अथाह जंगल-झाड़ रहने सुनल गप्प भाँजेपर ने चढ़लैन। भाँजोपर केना चढ़ितैन? जैठाम माने जइ समाजमे दू दिशाक दूटा पैघ कारखाना बैसल रहत आ तेकरा इर्द-गिर्द सइयो रंगक निरमात्री मशीन सेहो बैसल रहत, तैठाम कोनो चीजकेँ भँजिया कऽ पकड़ब बाल-बोधक खेलौना नइ ने छी.! ..अपन वौआइत मनकेँ रोकि भविसलाल काका बजला-

“बसन्त, नीक जकाँ मोन नइ पड़ि रहल अछि, तँए कनी सेरियाकऽ कहह?”

बसन्तलाल भाय बजला-

“वएह सागवानबला.!”

अपना जनैत बसन्तलाल भाय भविसलाल काकाकेँ मोन पाड़ि देलखिन मुदा हुनका मोन पड़ि गेलैन नेपालक सागवानक बोन। माने, पचास बर्ख पूर्व जे भविसलाल काका बराहक्षेत्र गेल छला आ तहिया जे सागवानक बोन देखने रहैथ से मनमे नाचि उठलैन। भविसलाल काका बजला-

“माटिक गुण-शक्तिक कारणेँ नेपालक जंगली-इलाकामे कोनो फल वा लकड़ी जे पहाड़ी-पथरीली भूमिपर होइए तइ अनुपातमे तराइ-इलाकामे भिन्न होइते अछि। तैठाम जँ पाइयक आँकमे एक्केरंग हिसाब लगाएब तखन ओ हिसाब गड़बड़ भइये जाएत किने।”

भविसलाल कक्काक विचार आ बसन्तलाल भाइक विचारमे तरपट देखि अपने वौआइत रही। शुरूमे जे मनमे भेल छल जे बसन्त भायकेँ अपन विचार देबैन, से उकड़ूमे पड़ि गेने मनेमे रहि गेल। मुदा तैयो अपन मनक जिज्ञासा उठिते रहल। बजलौं-

“बसन्तलाल भाय, अहाँ दुनू गोरेक विचारक बीच हम तेहाला

भेलौं, तेहालाक माने भेल निरगुण। तँए पहिने दुनू गोरे एक विचारमे आउ। पछाइत ने देखल जाएत जे की दुरगुण आ की सुरगुण।”

जहिना अपने बजलौं तहिना भविसलाल काका सेहो बजला-

“बसन्त, कनी फरिछाकऽ तोहीं बाजह।”

अधलो काज केलापर जँ समाजक बीच बजैक समय भेटैत रहए तइसँ प्राश्चित कटिते अछि। जइसँ ओ अधला काज तर पड़ि जाइते अछि। मुदा तइसँ चीत-पट, माने हारि-जीतक बीच तरपटो तँ होइते अछि जइसँ कहियो फरिछौठ थोड़े हएत? जखने फरिछौठ नहि भेल तखने औन्हा समय बनत। जे अधलाहकेँ फड़ै-फुलाइले बेसी अनुकूल भऽ जाइए। एकटा भारगाड़ी तरमे पड़ि जाइए आ दोसर माल-गाड़ी पकैड़ छुड़छुड़ी जकाँ छुड़-छुड़ाकऽ आगू बढ़िये जाइए। ओइ बढ़ैक पाछू लोक नहि मलकत तँ केतए मलकत..!

बसन्तलाल भाय बजला-

“बतहू, भविसलाल काकाकेँ तँ सभटा बात बुझले छैन, भऽ सकैए अखन मनसँ उतैर गेल होनि, मुदा जखने चर्चा शुरू हएत कि भगजोगनी जकाँ अपने मनमे भुकभुक जागए लगतैन, मुदा तोहूँ कनी कान ठाढ़ कऽ कए सुनह।”

ओना, सुनैक अपन मन बनले छल मुदा बसन्तलाल भाइक अँड़पेनसँ आरो जिज्ञास बढ़ि गेल जे भरिसक बसन्तलाल भाय नमहर चोट खेने छैथ तँए नीक जकाँ सुनबए चाहि रहला अछि। बजलौं-

“बसन्तलाल भाय, खढ़िया जकाँ सदिकाल लोक कान ठाढ़ नहि राखत तँ मारि खेबे करत किने।”

अपना जनैत बसन्तलाल भायकेँ प्रोत्साहन देलिऐन, भलेँ बसन्तलाल भाय जे बुझने होथि, से तँ ओ जानता। मुदा मुँहक

रूखिसँ बुझि पड़ल जे बसन्तलाल भायकेँ किछु चोट जरूर लगलैन। ओना, अपनो जे बाजल रही से अनठेकानिये बाजल रही, किए तँ बात कोनो बुझल रहबे ने करए। तैबीच भविसलाल काका बजला-

“बतहू, पहिने बसन्तकेँ चाह पीयाबह। किए तँ सवाल नमहर जकाँ बुझि पड़ैए। एते तँ बुझए पड़तह ने जे जेते समयक प्रश्नक उत्तर हएत तेते समय एकरसता बनल रहक चाही, नहि तँ सूखल भूखक आ भुखक सुखलमे जे अन्तर होइए ओ तँ अन्तर रहबे करत। जहिना एकटामे पेट काहि कटैए तहिना दोसरमे मन–हृदय–सेहो काहि कटिते अछि।”

ओना, भविसलाल कक्काक विचार सुनि अपनो मन गाड़ी-पहियाक भाल्टू जकाँ ऊपरमुहेँ घुमि गेल। माने जेना गाड़ी-पहियाक भाल्टू जे निच्चाँ-मुहेँ रहैए ओ ऊपर चढ़ि उनटा जे घुमि जाइए तहिना भेल। ऊपर-मुहेँ घुमैक कारण भेल जे भविसलाल कक्काक मीठगर विचार मनकेँ तेना मीठबए लगल जे अपन मनक बात (विचार) तर पड़ि गेल आ भविसलाल कक्काक विचार ऊपरे-ऊपर, अमरलत्ती जकाँ, मनक गाछपर पसैर गेल। तैबीच चाह बनब पछुआइत देखि भविसलाल काका बजला-

“बतहू, सभ दिनक तूँ बतहूए रहि जेबह.!”

भविसलाल कक्काक विचार नीक जकाँ तँ नहि बुझलौं मुदा ‘बतहू’मे जे ‘बतहू’ जोड़ि देलैन, से सुनि मन कनी तमतमाएल जरूर मुदा अपने मने जखन अख्यियास केलौं तखन बुझि पड़ल जे भरिसक काका चाह बनबैले कहि रहला अछि।

असल विचार तँ आइ बसन्ते भाइक हेबाक छैन। तखन बीचमे अपने अनेरे ने बहिरोंपन कऽ रहल छी। भविसलाल कक्काक सभ विचार परबा-चिड़ै जकाँ घोंटि लेलौं। बिजली चालित चाह

बनबैबला मशीन छैन्हे, तहूमे हाले-सालमे चाह बनौनाइ सिखबे केलौं हेन, तँए अपनो मन ओम्हरे दौड़ौलक। चाह बना जखन गिलासमे ढारए लगलौं तखन मनमे भेल जे बसन्तलाल भाइक गिलासमे कनी बेसी चाह ढारब नीक हएत। किए तँ अपने सभ तँ चाह पीनहि छेलौं। सएह केलौं। ओना, भविसलाल काका तरे आँखिये बसन्तलाल भायकेँ देखिये रहल छला। जखन आठ-दस घोंट चाह बसन्तलाल भाय पीब लेलैन तखन हमरा दिस ताकैत बजला-

"बतहू, लोक बताह किए होइए?"

भविसलाल कक्काक विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ल। भाँजोपर केना चढ़ैत? ने अपने कोनो गहबरक भगता छी आ ने सरकारी अस्पतालक डॉक्टर, तखन किए एहेन बात भविसलाल काका बजला अछि। मनमे भेल जे किछु कहिऐन मुदा अपने मन मनाही केलक जे एना जँ कहा-कही करए लगब तखन जइ काजे बसन्तलाल भाय आएल छैथ, से पछुआ जेतैन। अपने कि समाजक आन जकाँ छी जे अनकर पेट काटि अपन पेट भरब। तँए चुपे रहलौं।

भविसलाल काका बजला-

"बसन्त, देखिते छह जे अस्सी-पचासी बर्खक भऽ गेलौं, जहिना देहक सब अंग रसे-रसे झड़ि रहल अछि तहिना ने मनो आ मनक विचारो झड़ि रहल अछि। तँए कनी फरिछा कऽ बाजह।"

भविसलाल कक्काक विचार अपनो नीक लागल। तँए हुनका समर्थनमे बसन्तलाल भायकेँ कहलयैन-

"बसन्त भाय, अनेरे ने गों-गों करै छी। ऐ रमरटियासँ नीक खढ़कटिये। खोलि कऽ तेना बाजू जे जेसभ ऐठाम बैसल छैथ,

सभकियो सुनबो करैथ आ बुझि कऽ विचारो दैथ।”

ओना, बजैले बसन्त भायकेँ ठेललयैन मुदा ठेला गेला भविसलाले काका। ठेलाइते काका बजला-

“बसन्त, तोरा बजैसँ पहिने हमहीं बाजै छिअ।”

मने-मन विचारए लगलौं तँ बुझि पड़ल जे बसन्तलाल भाय जे बीस सालक बात बाजल छला तहूसँ पहिलुका विचार भविसलाल काकाकेँ मोन पड़ि गेलैन अछि।

ओना, बजैक क्रममे बसन्तलाल भाय बजैक उपक्रम कइये रहल छला कि बिच्चेमे भविसलाल काका बजला-

“बतहू, पचास बर्ख पूर्व अपने बराक्षेत्र गेल रही। इटहरीक पछाइत चतरागद्दी तक बोने-बोन आ तइसँ आगू पहाड़े-पहाड़ अछि। ओना नेपालक पहाड़ी इलाकामे बेसी बोने अछि, मुदा जे देखलौं से कहै छिअ।

चतरागद्दी तक ओहन बोन अछि जइमे सखुआ, सागवान इत्यादि केतेको रंगक गाछ सभ देखबहक। पचास-पचास हाथ, साए-साए हाथक तकक गाछ सभमे एकोटा डारि-पात नहि अछि, एकदम सुरुंगवा गाछ सभ देखबहक। तइमे सागवानो सभ अछि। फल-फलहरीक गाछ नहि अछि। जखन डारिये-पात नहि रहत तखन बीचमे फल-फलहरी जँ फड़बो करत तँ केतए पड़त। तँए फल-फलहरीक गाछ नहियेँ अछि सेहो बात नहियेँ कहल जाएत।”

फल-फलहरीमे नेबोक नाओं मोन पड़िते जहिना जीहसँ अपने पानि चुबए लगैए तहिना भविसलाल कक्काक बात सुनि अपनो सनतोला मोन पड़ि गेल आ जीहसँ पानि टपकए लगल। बजलौं-

“काका, ओमहुरका सनतोला बड़ मीठ होइए।”

अपना मने ई सोचि बाजल छेलौं जे सौरव-सारव माने सखुआ-सागवानक चर्चा छोड़ि काका फल-फलहरी दिस झुकि गपकेँ आगू बढ़ेता। मुदा से भेल नहि, भेल ई जे मुड़कट्टी जवाब दैत बजला-

“गाछक टटका टुटल सनतोलाकेँ जँ माटिक गरे पनरह दिन घरमे सुखा ली तँ आरो बेसी मीठ भऽ जाइए।”

लगले फेर बजला-

“अनभुआर तँ ताबे तक अनभुआर रहैए जाबे तक बुझल नहि रहै छै। मुदा बुझला पछाइत तँ लोक भुआर भइये जाइए, तँए एकटा चाहक दोकानपर बैसलौं आ जंगलक चर्च उठा देलिऐ।”

भविसलाल कक्काक विचार सुनि अपन मन चपचपा गेल। चपचपाइक कारण भेल जे अपनो बुझल अछिए जे चाहक दोकानपर देशक वक्ता आ ताड़ीक दोकानपर देशक विधाताक बैसार होइते अछि। कहब जे ताड़ी दोकानपर विधाताक बैसार केना अछि? जैठाम दिनमे होली आ रातिमे दिवाली नित्य सजल रहैए तैठाम रंकक निर्माण की राजासँ कम सुख-भोगमे अछि। जँ सोझा-सोझी राजो पड़ि जेता तँ सइयो रंक खरीदवाल ताड़ी दोकानपर रहिते अछि। बजलौं-

“तखन तँ विचारक लहरि उठि गेल हएत? किए तँ जहिना एक दिस सरर-चानन चोरक जमाव चाहक दोकानपर होइए तहिना सुखाएल जारन काटि दोकानमे बेचि जीबैबला नहि रहैए सेहो बात नहियेँ अछि।”

अपन विचारकेँ एकाग्र करै दुआरे आकि छिड़ियाएल विचारकेँ समटै दुआरे भविसलाल काका बजला-

“चाहक दोकानपर एकगोरे बजला जे मगही भाषा क्षेत्रक

लोक सिनुरकेँ भलेँ खानक वस्तु बुझैथ मुदा मिथिलांचलक लोक सिनुरक गाछक फल सिनुरकेँ बुझिते छैथ।”

ओना, अपन मन कनी झुनझुनाएल जे लगले-सूरे भविसलाल काकाकेँ पुछि दिऐन जे एक्केरंगक सिनुर लोक सभ दिन करै छैथ आकि समय देखि करै छैथ? किए तँ बुझले अछि जे आयुर्वेदक दवाइक खोराक मौसमक अनुकूल होइए। एक्के रोगमे जहिना जाड़मे खोराक बढ़ि वा घटि जाइए तहिना किछु एहनो तँ अछिए जे कोनो रोगक खोराक गरमीमे बढ़बो-घटबो करिते अछि। मनमे भेल जे जहिना हमरा भविसलाल काका ‘बतहू’ कहिते छैथ तहिना किए ने अपन बतहपना देखा दिऐन। बजलौं-

“काका, बसन्त भायकेँ वलिक छागर जकाँ चाह पीया जअ-तिल उसरैग देलिऐन तखन अपने बराक्षेत्रक बोनमे किए घुमबै छी?”

हमर बात सुनि भविलाल कक्काक देह सिहरलैन, बजला-

“बसन्त, आब तोरे नम्बर एलह।”

तैबीच बसन्तलाल भाय बजला-

“काका, नाक छुबि कनी मन पाड़ियौ जे बीस-पचीस बर्ख पूर्वक बात छी, जइ समय सरकारियो संस्था सभ आ आनो-आन प्राइवेट संस्था–एन.जी.ओ.–सभ सागवान रोपैले अभियान चलौलक। अपनो सभ दिन यएह इच्छा रहैए जे किछु नव करबो करी आ किछु नव सीखबो करी।”

अखन तक भविसलाल काकाकेँ नीक जकाँ अपन विचार मोन नहि पड़ल छेलैन तँए लगले-सूरे बसन्त भाइक गपक जवाबमे बाजि गेला-

“हँ, से तँ चलले छल।”

भविसलाल काकाकेँ एकमुँहरी होइत देखि अपने बजलौं-

"काका, ओहन अभियान चलल आ अहाँ समयकेँ छोड़ि पछुआ केना गेलौं?"

जहिना कोनो घटित घटनाक जगह लग गेलापर घटना मोन पड़ि जाइए तहिना भविसलाल काकाकेँ धक-दे मोन पड़लैन। बजला- "कोनो अभियानकेँ चलैसँ पहिने अख्यिाइस ली जे एकर भविस की कहै छै। एकटा बात बजैमे छुटि गेल से पहिने कहि दइ छिअ।"

भविसलाल काकाकेँ अपन बात एकटा मोन पड़िते देखि अपन मन तरैस गेल जे फेर बटुआ महक विचार निकलत। झटकारि कऽ बजलौं-

"काका, अहूँ बसन्त भाय जकाँ सुरे-ताल मिलबए लगलौं आकि झट-दे बाजब।"

भविसलाल काका बजला- "चाहक दोकानपर एक गोरे बजला, हजार-हजार बर्ख आ पँच-पँच हजार बर्खक गाछ सभ जंगलमे अछि। एमहर पहाड़ी माटि अछि, माने पथरीली, तँए गाछक सिरक सम्बन्ध सकताएल माटिसँ रहने तँ झाँट-पानिसँ लड़ैक शक्ति बेसी रहै छै। तैसंग सघन हवा-बिहाड़िक सामना बेसी जंगलकेँ करए पड़ै छै गाछकेँ नहि।"

बसन्त भाय बजला-

"सागवानक बागवानी तँ नहि मुदा एक बीघा खेतमे हमहूँ खेती केलौं। बीस सालक पछाइत हिसाब बुझि मन एते चपचपा गेल जे अनेरे लोक नोकरी किए करैए। बैसले-बैसल करोड़क आमद.!"

बसन्त भाइक मुँहक बात छीनैत भविसलाल काका बजला-

“अपना सभसँ ओ ने बुधियार छला जे जी.टी. रोडक दुनू कात आमक गाछ रोपलैन। दिल्लीसँ कलकत्ता तक जोड़ि लहक जे केते फलदार गाछ रोपलैन।”

भविसलाल कक्काक विचार सुनि अपनो मनक घन्टी जेना बाजल। ठीके खानखाना रहीम कहने छैथ, रोपब गाछ बगुरक तँ आम केना खाएब।

बिच्चेमे रीतलाल भाय जे शुरूहेसँ बैसल छला, बजला-

“भविसलाल काका, जे समय चलि गेल तैपर जअ-तिल फेकि सुआछन दऽ दियौ। कहलो गेल अछि जे बितलाहाकेँ पराछीत करबे नीक। तहूमे बसन्त भाय कि किनको ठकलैन आकि अपने ठकेला।”

भविसलाल काका बजला-

“ओही बोनक रोपाइ-समयमे एक्के कट्ठामे आठटा अम्रपाली आमक गाछ रोपि देलिऐ जे साले भरिक पछातिसँ फड़ब शुरू केलक। अखनो पाँच-साए-हजार आम प्रति गाछ फड़ैए।”

❑

शब्द संख्या : 2369, तिथि : 05 दिसम्बर 2021

बिनु खुट्टाक गाए

छठम-सातम दशकमे आने गाम जकाँ इमानपुर सेहो मिथिलाक गाम छल। ओइ समय वातावरणमे एहेन राजनीतिक चेतना जीवित छल जे जयप्रकाश बाबू, सूरज बाबू, कर्पूरीजी, धनिकलालजी इत्यादिक संग मधुबनी जिलाक मध्यसँ पच्छिम, अखुनका दरभंगा जिला तक, भोगेन्दजी, राजकुमार पूर्वे आ तेजनारायणजीक संग अनेको कार्यकर्ता, ओहन जुझारू छलाहे जे दिन-राति देशक समस्या आ समाधानक उपाय बुझेबो आ करैयोक पाछू बेहाल छला। तइ समय इमानपुरक सुमनकान्त हाइ स्कूलक विद्यार्थी छला।

समाज तिरहुतिया झोंकमे पड़ले छल, अखनो अछि जे जइ गाममे बेटीक बिआह केने छी ओइ गामक अकची-दोकची नहि बाजि सकै छी।

दिवानाथ आ निशाकान्तक बीच भैंसा-भैंसीक कनारि साहित्य क्षेत्रमे छेलैहे। जे नइ खून तँ देह-हाथ सिंगसँ चीर-फारि देबे करता। दुनू बीच वैचारिक दूरी एतेक जे भाँगक शर्वतमे जँ पचि जाइत तँ एक-दोसरकेँ उठाकऽ पीब लइतैथ। दुनूक जीवन आन सम्बन्धमे जे रहल होनि मुदा साहित्यिक मंचपर एक्केठाम बैइसै छैथ। दुनू पीतमरू साहित्यकार छथिए तँए गोष्ठीकेँ अपन अनिवार्य काज बुझितो एकठाम होइते छैथ।

साहित्यकारक बीच जे भोजनक सम्बन्ध रहल, माने जैठाम

जेहेन स्वागत भेल तैठामक तेहेन चर्चा भेल आ जैठाम से नहि भेल तैठामक हँसारथ भेल। किछु इलाका एहेन अछि जे भोज-काजमे अगुआएल अछिए। भोजनक बीच जे अगुआएल-पछुआएलक विचार साहित्यकारक बीच अछि ओ तँ एकरूपता एनहि कमत। एकरूपताक तँ विराटपन वएह ने भेल जे जीवनक सभ दिशामे एकरूपता हुअए। ओ एकरूपता अनैले पछुआएलकेँ सेहो अगुआए पड़तैन आ अगुआएलकेँ सेहो शान्त-चित्तसँ अपन जगह ग्रहण करए पड़तैन।

..वैचारिक मतभेदकेँ पाटैले सुमनकान्त साहित्यिक गोष्ठीक आयोजन केलैन। जइमे खासकऽ खेबा-पीबामे जेहेन बेवस्था आनठामक कार्यक्रममे नहि भेल छल, तेहेन बेवस्था केलैन। कार्यक्रमक पछाइत बेवहारमे एकरूपता एबे कएल। खाएर जे भेल से भेल, संयोगसँ दिवाकान्तो आ निशाकान्तो कार्यक्रममे पहुँच गेला। निशाकान्तक सोभाव एहेन जे सदिकाल विरोधे निरमबैक प्रक्रिया मनमे चलैत रहै छैन, जइसँ भारपर जे बदाम अबै छल तेकर अंकुराकेँ टेढ़ कहैक आदत छैन्हे। कार्यक्रमक रूप देखि निशाकान्त भीतरे-भीतर तँ खूब जरला मुदा अपन भगिनीक सासुर इमानपुर रहने तिरहुतिया भौकमे पड़ि गेला। तँए गामक इतिहास, माने भगिनीक सासुरक परिवारसँ चिन्हा-परिचय करैमे बेसी समय लागिये गेल छेलैन।

दुखद पहलू बुझू आकि संयोग, बेटी पक्ष रहने इमानपुरक सम्बन्धी सभ ठेलने-ठेलने सीमाकात टपा देलकैन मुदा निशाकान्तो बाबू तँ निशाकरजी छथिए, महादेव जकाँ कार्यक्रमक प्रशंसा ओहन कइये रहला अछि जे अपन परिवारसँ सामूहिक रूपमे तय भेल। तय भेल जे ‘सगर राति दीप जरय’क कार्यक्रममे एते तरहक भोज्य विन्यास केतौ नहि छल आ समाजक रूझानो एहेन जे दोसर

कार्यक्रममे नहि भेल छल। निशाकरजी इमानपुरक साहित्यिक कार्यक्रम केलाक पछाइत अपन गाम गेला। संयोग बनलैन जे जइ भगिनीक सासुर इमानपुर, ओ गाड़ीसँ उतरला पछाइत डेरापर पहुँचते सोझामे पड़ि गेलैन। कौशल्या शिक्षिकाक संग शिक्षक-नेता, तँए बजैमे फड़कोर छथिए। निशाकान्त बाबू बजला-

"कौशल, तोहर सासुर देखलियौ।"

सासुरक नाओं सुनि कौशल्या मुस्कुराइत कहलकैन-

"रस्ताक थकान अछि। पहिने पानि-चाह पीबू, पछाइत स्नान कऽ लेब। ताबे हमहूँ खाइ-पीबैक ओरियान करै छी।"

जहिना भूखल राजा हुअ कि रंक, अपन वाध्यता देखैबते अछि। तहिना निशाकान्त बाबू बजला-

"गाड़ी-सवारी आकि स्टेशने परहक कोनो सामान खाइबला होइए। पानियोँ तेहेन भेटैए जे नल-ट्यूवेलसँ भरि सफका शीशीमे 'शुद्ध जल' कहि बेचैए.!"

सासुरक नाओं सुनि कौशल्या ओहिना खुशी भेली, जेना बिआह-दुरागमनसँ पूर्व बिऔहिता-दुरगमनिया लटलट करैए। खाएर एकरा छोड़ू। सुमनकान्तक साहित्य क्षेत्रमे प्रवेश द्वार वएह गामक साहित्य कार्यक्रम छिऐन।

अपना ऐठाम अदौसँ चलैन रहल अछि जे घरवासक भोज घरवारी करि कऽ अपन घर-दुआर समाजकेँ ई सोचि देखबै छैथ जे अपन देखा देने रहबैन तखन ने ओहो अपन देखौता। आकि हम दुनियाँकेँ खूब देखै छी, आ अपन कियो ने देखैए।

साठि इस्वीसँ पूर्व, जहिना इलाकामे शिक्षण-संस्थान आँगुरपर गनल छल तहिना समाजमे शिक्षणक गति सेहो मंथरे छल। मैट्रिक पास बेकती कोनो-कोनो गाममे छला। जँ मैट्रिकमे

कनियोँ नीक रिजल्ट होइ छल तँ इलाकामे चर्चाक मुद्दा बनि जाइ छल। गुलाम देशक जे रूप-रेखा होइए ओ अपनो मिथिलाक छेलैहे। तहूमे लोक इमानपुरकेँ घेघहा गाम कहै छल। कहब की घेघहा गाम? ..इमानपुरक लोक अस्सीक दशकसँ पूर्व इनारेक पानि पीबै छला आ पोखैरमे नहाइ छला।

इनारक पानिमे आयोडिनक कमी छल, जे पानि समाजक लोक पीबै छला। तइसँ गरदैनमे फलकान आबि जाइ छेलैन, तँए गामक चारूकातक गामक लोक इमानपुरकेँ घेघहा गाम कहै छल, मुदा सातम दशकसँ पानिक महत्वकेँ बुझिते समाज, माने इमानपुरक लोक, एते जागि गेला जे इनारक उपटान तँ भेबे कएल जे खेतक पटौनी ले सेहो प्रति आठ बीघाक हिसाबसँ गाममे बोरिंग गड़ि गेल। दमकलक भरमार भऽ गेल। किसान तेते जागि गेला जे चाउर-दालिक संग तीमन-तरकारी आ फल-फलहरी सेहो आन गामक लोकक हाथे बेचए लगला। तरकारीक खेती भेने गाममे बेचैबलाक जरूरत पड़ल। दस गोरे रोजगार करब शुरू केलैन।

सत्तैरिक दशक तक अबैत-अबैत सुमनकान्तकेँ समाजक दशा-दिशाक बोध भऽ गेलैन। भोगेन्द्रजीक राजनीतिक कार्यक्रम जहाँ-तहाँ चलिते छेलैन। मंचक इमानदार वक्ता भोगेन्द्रजी छेलाहे। अपना इलाकामे, माने मधुबनी जिलाक पूबरिया इलाकामे, समाजवादी विचारधाराक बोलवाला छल। खाएर जे छल तइसँ सुमनकान्तकेँ कोन मतलब छेलैन, मतलब छेलैन अपन समाजकेँ आगू बढ़ाएबसँ।

देश स्वतंत्र भेला पछाइत जहिना गाम-गाम मिला कऽ पंचायतक निर्माण भेल तहिना पंचायतमे मुखिया, सरपंच, पंचायत सेवकक बेवस्था सेहो भेल। गाम-गाममे जहिना भूदानी कार्यकर्ताक बैसार, पदयात्रा इत्यादि होइ छेलैन तहिना राजनीतिक

कार्यक्रम सेहो चलिये रहल छल। जातिवादी विचारसँ सभ प्रभावित रहबे करैथ।

जातियोक तँ अजीव लत्ती अछिए, जे शीत-रौदमे जँ मरनासन्नो होइए तँ साओन-भादोमे लतैर-चतैर जाइते अछि। कहब जे अमरलत्ती जकाँ बिनु जड़ि-सिरक अछि, से नहि अछि। माटिक भीतर ओकर जड़ियो छै आ सिरो तँ छइहे। तँए करवनो-काल एहेन सुनबे करब जे 'एहेन विचार जाति-पाँजिसँ ऊपर उठि करू।'

कम्युनिस्ट पार्टी भोगेन्द्रजीक नेतृत्वमे करीब छठम दशकसँ बाढ़ि-रौदीक समाधानक आन्दोलन चलि रहल अछि। जिलाक लोक जे आब कोसी, कमला, बागमतीक महत्वकेँ बुझि रहला अछि। भोगेन्द्रजीक आन्दोलित विचारकेँ सभ राजनीतिक दल रोकलैन। नतीजतन समाज पछुआ गेल।

सातम दशकक अन्त आ आठम दशकक शुरूमे सुमनकान्त कौलेजसँ निकैल गेल रहैथ। दुर्गापूजाक मतभेद इमानपुरमे शुरू भेल। कहब जे पहिनेसँ होइत अबैत पूजामे मतभेद भेल? ..नहि प्रथमे पूजामे मतभेद भेल। 'लूटमे चरखा नफ्फा' सएह भेल इमानपुर गामकेँ। अखन बेसी नहि कहब, मात्र एकटा बात कहब।

अपना इलाकामे ठाम-ठाम दुर्गापूजा बहुत दिनसँ होइत आबि रहल अछि। खास कऽ सोति-ब्राह्मणक गाममे। पछाइत आनो-आन जातिक गाममे शुरू भेल। इमानपुरक समाजमे, जहिना कबीर मतक विचार तहिना आनो-आन धार्मिक सम्प्रदाय सबहक विचारक लोक छेलाहे। जइसँ दुर्गास्थानमे बलिप्रदानक विरोध भेल। गामक लोकक विचार एकमुँहरी जे गाममे दुर्गापूजा हुअए मुदा वलिप्रदान नहि हुअए। ब्राह्मण दुनू दिस बटा शक्तिहीन भइये गेल छला। दुर्गापूजाक माने भेल दस दिनक दसो दुआरिक पूजा। सौंसे गामक हिन्दूक पूजा।

आइ पचास बर्खक दुर्गापूजा इमानपुरमे भऽ गेल छैथ मुदा अखन तक वलिप्रदान, छागरक वलि, नहि कबूल केलैन अछि। जखन कि चारूकातक आन-आन गाम सबहक दुर्गास्थानक दुर्गा वलि चढ़ौआ लइते छैथ। एकर माने इमानपुरक सीमा बन्हाएल अछि? नहि, सोल्होअना नहि बन्हाएल अछि, अखनो इमानपुरक किछु गोटा चढ़ौआ कबुला मानि आन-आन गाममे छागर चढ़ैबते छैथ। तँए कहब जे इमानपुर गामक दुर्गाकेँ आन-आन गामक लोक लड़ु-मिठाइ आकि फल-फलहरी नहि चढ़बै छैन, सेहो बात नहियेँ अछि। आजुक परिवेशमे देवालय सभक सेहो व्यापारीकरण भइये रहल अछि। अपन जीवनमे सुमनकान्त जहिया जे केलैन से सभ बिसैर अपन विचार अपना जीवन ले स्थापित कइये नेने छैथ।

1967 इस्वीक पछाइत इमानपुरमे सुमनकान्त अपनो कम्युनिस्ट पार्टीक सदस्य बनला आ अपना गाममे सेहो सदस्य बना पार्टी ठाढ़ केलैन। समाजक अधिकांश जातिक पढ़ल-लिखल नौ-जवान संगठित भेला। सुमनकान्तकेँ सेहो दिशाक बोध कौलेजे जीवनसँ भेलैन, मुदा जखन ओ गाममे, माने इमानपुरमे चारि दिनक पार्टी क्लास चलौलैन तखन विचारक दिशामे आरो मजगूती एलैन।

जमगर कार्यक्रम भेल, मार्क्सवादी चिन्तक-साहित्यकार जनार्दन चौधरी, प्रभुनारायण राय, डॉ. खगेन्द्र ठाकुर, चन्द्रकेतु शर्मा आ भोगेन्द्रजीक संग अनेको साथी कार्यक्रममे भाग लेने रहैथ। समाजपर काफी प्रभाव पड़ल। समय आगू बढ़ल।

1952 इस्वीमे स्थापित पंचायत चुनाव, 1962 इस्वीमे भेल। अधिकांश गाम (पंचायत) ओहने छल जैठामक लोक पंचायतक महत्व बुझिते ने छला। मुदा तँए कहब जे सौंसे जिलाक पंचायतमे अहिना भेल, सेहो नहियेँ भेल। जमि कऽ लड़ाइ सेहो चलल। तहूमे

मधुबनीक पच्छिमी क्षेत्रमे भूमि आन्दोलन जमि कऽ चलि रहल छल, गाममे आर्थिक जागृति आबि गेल छेलइ। ओना, आजुक जे बजारोन्मुख दिशा समाजकेँ भऽ गेल अछि जइसँ गाम गामे बनल रहि गेल।

आजादीक दौड़क जे आन्दोलनी पीढ़ी छला, ओहो दिनानुदिन, उमेर पेब, कमए लगला। जइसँ राजनीतिक चेतनाक ह्रास समाजमे भेल। सेवाक रूप बदैल गेल। सस्ता नेतृत्व बढ़ि गेल। कोनो स्थानमे कोनो पूजाक अगुआइ केलौं, जइमे कमेबो केलौं आ समाजक बीच प्रभावशाली सेहो भेबे केलौं। तहिना आनो-आन एजेन्सी सभ सक्रिय अछिए। खाएर जे अछि, अखन एतबे कहब।

दिशाक बोध भेने सुमनकान्त अपन गामकेँ खँतिया कऽ, माने गामक बीच जे कोनो शोषित बेवहार चलि रहल छल तेकरा सभकेँ गतानिकऽ, अपन सेवा कर्म शुरू केलाह।

ओना, राजनीतिक मंचपर बैस विचार करब तखन अन्तर्राष्ट्रीयसँ परिवारक संग मनुक्खक जीवन अनेको स्तरक समस्यासँ ग्रसित अछिए ओही समस्यासँ मुक्ति कराएब भेल सेवा।

सुमनकान्त अपन जीवनकेँ गाम-समाजसँ जोड़ि सामाजिक, आर्थिक आ राजनैतिक- सभ दिशामे समाजकेँ आगू-मुहेँ धकेलैक विचार करैत सभसँ पहिने समाजक बीच जे खेबा-पीबाक छुति बनल अछि, ओइ दिस बढ़ला। समाजक कोनो जाति शेष नहि बँचला जिनका ऐठाम समाजक सभ जाति नहि खेलैन। समाजमे धार्मिक स्थान सभक एहेन धारणा बनले अछि जे कियो कहैत जे ‘जाति न पूछो सन्त को पूछो आत्मिक ज्ञान।’ तहिना दोसर दिस सेहो एहेन चलैन अछिए जे जातिसँ ऊपर उठि जखन कोनो धार्मिक सम्प्रदायसँ जुड़ै छी तखन सभ एक भेलौं, तँए एकठाम बैस खेबा-

पीबामे कोनो परहेज नहि। ओना, समाजमे बेटा-बिआहक बरियाती आ मृत्युक बरियातीमे सभ जातिक प्रवेश सभठाम अछिए, मुदा सामाजिक रूपमे एहेन बेवहार सेहो अछिए जे नहेबोकाल आ खेबोकाल अलग-अलग भइये जाइत अछि। सामन्ती शोषण ऐ रूपेँ समाजकेँ जकड़नहि छल जे पढ़लो-लिखल विद्वत प्रवर छुआ-छुतक विचार करबे करै छला आ करितो छथिए। जघन्य-सँ-जघन्य अन्याय बच्चा सभक संगे भेल अछि। चौकीपर बैसल सहवर्गी छात्रकेँ लगमे गुरुजी बैसबै छला आ आन-आन जातिक बच्चाकेँ ठेहुनियापर बैस चौकीपर किताब-कौपी रखि पढ़बै छला। खाएर जे छल ओकरा गुरु बुझू सतगुरु नहि। सतगुरु वर्तमान जीवन देनिहार भेला।

सामाजिक रूपमे दुर्गापूजामे सबहक प्रवेश भेलैन। सबहक माने सभ जातिक बच्चियाकेँ कुमारि मानल गेल, जइसँ खेनाइ खेबाक संग अनेको बेवहारमे एकरूपता आएल। तैसंग खेती-गिरहस्तीक संग सुमनकान्तक जीवन चलिते छेलैन।

ओना, विस्तारमे नहि जाएब। जहिना शिक्षाक क्षेत्रमे तहिना किसानी जीवनमे गाम बहुत आगू बढ़ल। समाजक वैचारिक विचारक हवामे पार्टीक बीच टूट शुरू भेल। पंचायत तेसर चुनावी दौड़ आएल। पार्टीक बीच कसगर दराइर जाति आ वर्गक रूपमे उभरल।

अखन तक समाजक जे सामाजिक रूप छल, तइमे सूदखोरी, जमीनक बटाइ, सिकमी, भूदान इत्यादि आन्दोलन सभ कोनो-ने-कोनो रूपमे चलिये रहल छल। अनेको बेकती केस-मुकदमामे सेहो पड़ले छला, मुदा तइमे भूदानक जिलाकार्यालय नाटकक विपटाक काज करए लगल। एक-एक जमीनक पर्चा तीन-तीन, चारि-चारि गोरेक नाओंसँ बनबए लगल।

सामाजिक नेतृत्वक सेहो सस्ता भइये गेल अछि। शहर-बाजारक आमदनी कोनो-ने-कोनो रूपमे गाम आबिये रहल अछि। सुमनकान्त समाजक बीच अपन अधिकार, माने भोँटक खरीद-बिक्री देखि अपनाकेँ चुनावक राजनीतिसँ कात करैत 2015 इस्वीक चुनावसँ सोल्हन्नी अलग कऽ लेलैन।

ऐबेरक चुनावमे सुमनकान्त स्पष्ट भऽ गेला जे ने कोनो उम्मीदवारक पक्षमे रहता आ ने विपक्षमे रहता। समाजक पंचायत छी समाजक लोक अपन निर्णय करह। अही विचारकेँ अगुआ सुमनकान्त अपनाकेँ पाछू कऽ लेलैन। ओना, सुमनकान्त ईहो देखि रहल छला जे बिनु जड़ि-छीपक उम्मीदवार सभ मैदानमे छैथ। कियो एकरंगा पहीरि तँ कियो पाइयक हाथे चुनावमे तैयार छथिए। मनमे चुट्टी धारीक अनुभव छैन्हे। जहिना चुट्टीक धारीमे विपरीत दिशासँ अबैत चुट्टीकेँ सभ चुट्टीक संग मुँहमिलानी होइते अछि, से हेबे करत। जइसँ सभकेँ अपन राजनीति आ राजनीतिक बोध हेबे करतैन। पछाइत अपन भविसपर नजैर गाड़ि अपन जीवन बनौत।

एहेन विचार मनमे उठैत-उठैत सुमनकान्तक मनमे महाभारतक ओ विचार उठि गेलैन जे द्वापर युगमे भेल छल।

द्वापर युग ओहन युग छीहे जैठामक परिस्थिति कृष्ण सनक सुदर्शन चक्रधारीक जन्म देलक आ आगूओ देबे करत। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे महाभारत द्वापर युगक महाभारत भेला पछाइत अर्जुन आ कृष्ण एकठाम बैस विचार केलैन जे जहिना अंगरेजी शासनकेँ हटबैमे देशक जनता सक्रिय रूपसँ भाग लेबे केलैन। कियो अंगरेजक पीठू बनि जन-गणक घरमे आगि लगौलैन, माए-बहीनिक इज्जत लुटलैन आ वएह सभ अपनाकेँ पैघ आन्दोलनी बनि स्वतंत्रता सेनानीक पेंशन उठबै छैथ। खाएर, ओइसँ जखन आगू बढ़ै छी तखन गाम-गाममे जे आन्दोलनी पेट

साधि जीवनकेँ लड़ाइक दावपर लगा अपन जानो देलैन, परिवारो बिलटौलैन आ हुनका कियो जानियोँ ने रहल छैन।

जिनकर नाओं लोक जनैए तिनकर पचहतरमी साल गीरहपर मोन पाड़ल जाइ छैन, मुदा जे हेरा गेल छैथ की तिनकरो पचहतरमी साल गीरहपर मोन पाड़ल जेतैन? जानसँ बाजी लगा जे आन्दोलनमे अपन हिस्सेदारी देलैन, हुनकर चर्च के करत? समाजक ओहन रूप बनि गेल अछि जइसँ समाजक सेवाक अरथे बदैल गेल अछि। खाएर जे अछि से अछि तइसँ द्वापर युगक अर्जुन आ कृष्णकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन जे कौरव-पाण्डवक बीच जे लड़ाइ भेल ओ दुनियाँक चौदह हजार लड़ाइमे एकटा ओहो भेल।

कृष्ण अर्जुनकेँ कहलैन- “अर्जुन, अहाँ लड़ाइक महानायक बनलौं, हम तँ अस्त्र उठेबे ने केलौं, एक-दू ठाम जे उठेबो केलौं तँ ओ चोरनुकबा भेल, सघन लड़ाइमे उठाएब नहि भेल। लाखो सेना अपन भागीदारी देलैन, तइमे बहुत गुमनामो रहि गेला, तँए एकबेर ढोल्हो दऽ दियौ जे महाभारतमे जिनकर जे योगदान छैन, ओ अपना मुहेँ बजता।”

कृष्णक विचार अर्जुनकेँ जँचलैन। तँए कृष्णक विचारकेँ मानि अर्जुन सौंसे देशमे, पाण्डव देशमे, ढोल्हो दिया देलखिन। ढोल्हो दिएलाक बाद अर्जुनक मनमे उठलैन जे जँ समय निर्धारित नहि कऽ देबैन तखन तँ सुननिहारेक बीच फेर महाभारत शुरू भऽ जाएत, तखन केकर नेतृत्व चलत? की फेरसँ महाभारत कराएब? कोनो देश होउ कि परिवार-समाज आकि बेकती-विशेष, महाभारत तँ एक्केबेर हएत।

अर्जुन कृष्णकेँ कहलकैन- “एक तँ सौंसे देशक लोककेँ एकठाम बैसा सभकेँ सुनि-सुनि बजैक मौका देबैन, तखन अपन केलहा काज बिसैर जेता आ सुनलहे बातक जवाब दिअ लगता,

तखन थाह केना पएब?”

अर्जुनक विचार कृष्णकेँ जँचलैन। बजला-

“दोहराकऽ ढोल्हो दिया दियौ जे पहिने महाभारतक विचार बाजैथ, पछाइत सुनल-सुनाएल विचारक जवाब, सवाल-जवाबक कार्यक्रममे दैथ।”

जहिना अर्जुन ढोल्हो दियौलैन तहिना महाभारतक रचयिता सभ अपन-अपन उपस्थिति दर्ज करबैत अपन-अपन वक्तव्य देलखिन। तइमे सबहक भावना यएह रहैन जे जँ हम नहि गुल्ली-पेंच केने रहितौं तँ महाभारतक सिहिन्ता अर्जुनकेँ लगले रहि जइतैन।

कृष्ण अर्जुन दिस देखि बजला-

“की अर्जुन?”

अर्जुन उत्तर देलैन-

“जनिहेँ मीयाँ धुनै बेरिया।”

चुनाव सम्पन्न भेल। जहिना एकक राजनीतिक प्रलय भेल तहिना दोसरक उदय सेहो भेबे कएल अछि। नरकोमे ठेलमठेल होइते अछि। एक-एकक जनगणना हएब शुरू भइये गेल अछि।

❑

शब्द संख्या : 2191, तिथि : 10 दिसम्बर 2021

जीवनक कर्म जीवनक मर्म

सात साए बर्ख पुरान गाम उदयपुर करीब पाँच साए घरक वस्ती बनि चुकल अछि। गामक बोन-झाड़ सोल्होअना तँ नहि मेटाएल अछि मुदा अधासँ बेसी तँ मेटाइये गेल अछि। ओही गाममे सवुरलाल आ मोतीलाल बच्चेसँ संग-संग रहने संगी छैथ।

गाम-गामक एहेन रूप-रंग बनियेँ गेल अछि जे गौंआँ अपन पानिक जोगार सोल्होअना कइये लेलक अछि। माने ई जे गाम-गामक भौगौलिक एहेन रूप अछिए, माने बाढ़ि-भुमकम आदिक प्रभावसँ, जे गामक जमीनक बनावटमे ऊपर-नीचाँ भइये गेल अछि। ओना, ई भेल धरतीक ऊपरका भाग, मुदा धरतीक भीतरोमे खाड़ीनुमा सतह बनले अछि। बरखा सेहो कोनो आइये होइए आ ओइ दिनमे नइ होइ छेलै सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो होइते आबि रहल अछि। ऊँचरस भूमिक पानि नीचरसमे जमा भइये जाइए, जइसँ सालक अनेको मास धरि ओइमे पानि रहबे करैए।

गौंआँक मनमे ताबे लक्ष्मीनाथ गोसाँइ नहि भेल छला जे पाइनिक महत्वकेँ बुझैबतैथ, अपने मन-उदय भेलैन जे पानिक खगता बारहो मास छत्तीसो दिन होइते अछि तँए जँ ओही नीचला भूमिकेँ आरो गहींर बना देब तँ सालो भरि पानि रहत जइसँ जीवनमे पानिक आवश्यकताक पूर्ति हएत। गाममे पोखैर बनि गेल। ओना, पोखैरमे जाठि नहि गड़ल। जाठि गड़ब पछाइत शुरू भेल। से अखन नहि।

बोन-झाड़मे बेसी अकठ्ठ लकड़ीक बाढ़ि होइते अछि तँए जंगलमे बेसी अकाठे लकड़ीक गाछ रहैए जेकर उपयोग कुरसी-टेबुल बनबैमे भलेँ किए ने होउ मुदा जैठामक लोककेँ पेटक आगि मिझबैक समस्या अछि तैठामक लोक तँ पहिने से ने पुरौत। तँए उदयपुर गामक लोक अकठ्ठ लकड़ीक बोनकेँ उपटा-उपटा फलदार गाछ-बिरीछ लगौलैन, जइसँ गामक एक-चौंथाइ जमीनमे फल-फलहरीक गाछी गौंआँ लगा लेलैन।

आन-आन गामक देखा-देखीसँ उदयपुरक लोक खेती करए लगला। माल-जाल सेहो पोसब छेलैन्हे। माटिक वर्तन-बासन सेहो बनियेँ रहल छल। माटिक पाटकेँ, पाटक माने भेल नादिनुमा गोल रूपमे माटिसँ बना ओकरा आगिमे पका–जँ खाधिमे रखि बना देब तँ माटिक धसान नहि हएत आ पानि सुरक्षित रहत। ऐ तरहेँ उदयपुरमे तीनटा इनार आ एकटा पोखरिक ओरियान समाज कऽ लेलैन।

जहिना समाज जातिमे बँटल अछि तहिना सम्प्रदायमे सेहो बँटले अछि। गाममे जहिना पनरहसँ ऊपर जाति अछि तहिना जाति-जातिक भीतर सम्प्रदाय सेहो अछिए।

अपना ऐठामक, जेकरा धार्मिक ग्रन्थ बुझै छिऐ, तहूमे विरोधाभासी विचार अछिए। एक विचारकेँ माननिहार दोसर विचारकेँ जहिना जाति-जातिमे रंग-रंगक लोक गारि पढ़निहार अछि तहिना सम्प्रदाय-सम्प्रदायमे नहि अछि सेहो बात नहियेँ अछि। जेकर फलाफल होइते आबि रहल अछि जे एक-सम्प्रदायबलाकेँ दोसर सम्प्रदायबलाक संग झगड़ा-झाँटी, मारि-पीटि होइते आबि रहल अछि। खाएर जे होइत आबि रहल अछि से होइत रहह तइसँ सवुरलाल आ मोतीलालकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन अपन दुनू संगीक संगपनक संग जीवन जीयबसँ।

ओना, शुरूमे जखन दुनू गोरेक पूर्वज उदयपुर गाम आबि बसला, तइ दिनमे मोतीलालक परिवार 'सिद्ध' सम्प्रदायक प्रभावमे रहैन आ सवुरलालक परिवार 'नाथ' सम्प्रदायक प्रभावमे छेलैन। ओना, उदयपुर गाम अबैसँ पूर्व मोतियोलालक आ सवुरोलालक पूर्वजक जे जाति रहल होनि मुदा उदयपुरमे दुनू एक जाति बनि गेल छला मुदा सम्प्रदाय दुनूक दू रहलैन।

जहिना सवुरलालक पूर्वज बहुत खेत जोतनिहार नहि छला तहिना मोतीलालक पूर्वज सेहो तेहेन खेतिहर नहियेँ छला। गाममे परती-पराँत, बोन-झाड़ बेसी छल तँए घरो बनबैक आ जे अपन खेत-पथार बनबए चाहै छला ओ बना लइ छला। तइ समय जमीनक सर्वे नहि भेल छल तँए कागज विहीन जमीन छल, माने जमीनक कागजी सबूत नहि छेलइ।

अखन तक तीनबेर जमीनक सर्वे भेल अछि। पहिल अकबरक समयमे, जे अध-कचड़ा भेल। दोसर, अंगरेजक समयमे जे 1903 इस्वीमे सम्पन्न भेल। तइ सर्वेमे थोड़-थाड़ इमानदारी रहल आ तेसर जे शुरू भेल ओ ने सर्वे भेल आ ने हदबन्दी-चकबन्दी। खाएर जे भेल से भेल। कमसँ कम सरकारी रेकर्डमे हदबन्दी-चकबन्दी तँ अछिए।

सवुरलालक परिवार जहिना 'नाथ' सम्प्रदायसँ प्रभावित छला तहिना मोतीलालक परिवार 'सिद्ध' सम्प्रदायसँ प्रभावित रहने दुनू परिवारक बेवहारमे किछु-ने-किछु अन्तर आबिये गेल छेलैन जेकर फलाफल दुनूक बीच एहेन भइये गेल छल जे सवुरलालक परिवारक सम्बन्ध गामक जेतेक अधिक परिवारसँ छेलैन तइसँ कम परिवारसँ मोतीलालक परिवारकेँ सम्बन्ध छेलैन। खाएर जे छेलैन ओ परिवारक बीतल दिनक बेवहार भेल। समाजक विचारधारामे सेहो रंग-रंगक विचारधारा प्रवेश कइये चुकल छल मुदा जीवनो तँ

जीवन छी। तहूमे मिथिलाक जीवन, जैठाम जकाँ ने दुनियाँक लोक एते रंगक समय, माने जाड़-गरमी- मौसम देखैए आ ने दिन-रातिक घटी-बढ़ी एतुक्का जकाँ केतौ छै। केतौ सालोभरि एक्केरंग समयो, उपजोवारी आ रातियो एक्केरंग होइए तँ केतौ अधा-अधी बँटाएल अछि। कुम्भकर्ण छह मास सुतै छला, मुदा रातियेटामे सुतै छला आकि दिनोमे सुतै छला, से फरिछौठ बाँकीए अछि। आखिर मिथिला तँ मिथिला छी किने। मिथिला दुनियाँक सिरमौर कोनो आइये भेल से बात नहि अछि। चाहे खाइ-पीबैक हुअए कि ओढ़े-पहिरै-बजै-भुकै आकि जीवन-यापनक, जेतेक अपना ऐठामक लोक बुझै छैथ ओ थोड़े आनठामक लोक बुझै छैथ। जखन एक माटि-पानिक क्षेत्र मिथिला-बंगाल आ आसाम अछि, माने भेल भौगौलिक भाषामे गंगा-बह्मपुत्रक मैदान, तहू बीचमे जखन तिलकोरक पातक तड़ुआ अपना सभ प्रेमसँ भोजन करै छी मुदा ओ सभ, माने बंगाल-आसामक लोक, तिलकोरकेँ 'बोन साग' आ 'बोन फल' कहि चास-बाससँ दूरे रखने अछि। अखन हम एक्के वंशक तिलकोर आ कुण्डलीक चर्च नहि करब जे एकटाक पत्ता किए तीत आ दोसराक फल किए तीत।

दुनियाँमे, बुझिते छी जे ने कोनो पदार्थ विष छी माने जीवन लइबला, आ ने अमृत छी माने जीवन दइबला, सभ सभ छी। माने जे जीवन दइबला छी सएह जीवन लइबला सेहो छीहे। अन्तर अछि मात्रामे। कोनो वस्तु केतेक मात्रामे विष अछि आ केतेक मात्रामे अमृत, ओ तँ हमरे-अहाँकेँ ने बुझए पड़त।

दुनियाँक सभसँ पैघ सत्येकेँ ने बुझब पैघ महानता भेल। मुदा सत्यकेँ बुझब ओतेक आसान अछि? एक्के शब्दक माने मुँह-मुँहमे फुट-फुट अछि.! जेना धर्मेक लिअ जे तृप्तिक जीवन दिअए ओ धर्म मार्ग भेल आ फल तिरपितता भेल माने ओहन आनन्द भेल जे

अभय दान दइए। मुदा जैठामक धर्म, डरसँ प्रकंपित करैए ओकरे हस्तियो छै। एना करब तँ ई पाप हएत, जेकर फल नर्क जाए पड़त..!

भाय, जखन विवेकवान मनुक्ख छी तखन अपनो साती जँ अपने नहि बुझब तँ अनकर मुँह देखने अपना भेटत? खाएर से अखन नहि, अखन एतबे।

हाइ स्कूल तक सवुरलाल आ मोतीलालक बीच ओहन सम्बन्ध नहि बनल छल जेहेन जीवन-सम्बन्ध होइए। हाइ स्कूल तक दुनूक बीच ओहने सम्बन्ध रहलैन जेहेन एक विद्यार्थीकेँ जँ गामक रस्तामे दोसर विद्यार्थीसँ भेँट-घाँट भऽ गेलैन तँ बड़बढ़ियाँ, गप-सप्प करैत स्कूल तक गेलौं, नहि तँ सभ असगरे-असगर गेलौं। ऐठाम हम काली भाइक (कालीकान्त झा, आई.पी.एस.क) चर्च नहि करै छी जे अपना ऐठामसँ स्कूल पहुँचैमे पनरह मिनट समय लागत, तैबीच केकरोसँ गप-सप्प करब नीक नहि। तेतेकालमे पाँचटा अंगरेजी वर्ड तरहत्थीपर लिखि लेलौं आ स्कूल पहुँचैत-पहुँचैत पाँचोकेँ चाटि गेलौं आ घुमती बेर फेर ओहिना केलौं, तखन ने आइ.पी.एस. हएब। मुदा जँ भरि जीवन अपने ले करब तखन सामाजिक प्राणी केना भेलौं? तखन पशुसँ मनुक्खमे संक्रमण की भेल? जीवन-मरणमे तँ समाजे बरियाती पुरैए।

एक गौंआँ रहितो सवुरलाल आ मोतीलालक बीच ओहने सम्बन्ध रहलैन जेहेन आन-आनकेँ रहैए। अखन हम ओइ हाइ स्कूलक चर्च नहि करै छी जैठाम केतौ नीक विद्यार्थीकेँ आगूमे बैसैक स्थान देल जाइए तँ केतौ जातीय आधारपर आगू-पाछू बैसाएले जाइए। खाएर जे कएल जाइए से कएल जाइए, ओ करनिहारक बेवहार भेल दोसरकेँ आकि सवुरेलाल आकि मोतीएलालकेँ तइ सभसँ कोन मतलब छेलैन। मतलब एतबे छेलैन

जे माए-बाप हाइ स्कूल पढ़ैले पठबै छैथ, पढ़बे ने अपन काज भेल। जेकर फल परीक्षाक रिजल्टसँ होइए। तैठाम मोबाइलेसँ पढ़ि लेब सम्भव अछि? हे विषय पढ़ि लेब, मुदा मनुक्खक जीवन केना पढ़ि हएत? ओ तँ भेटत एक-दोसराक जीवनक बेवहारिक सम्बन्धमे।

जीवन ओहन सघन वन जकाँ अछि जे एक्को डेग आगू देखब असम्भव, तैठाम अपन जीवन बना कर्तापुरुष बनब बाल-बोधक खेल नहि ने छी।

सेकेण्ड डिवीजनसँ पास केलाक पछाइत दुनू गोरे, माने सवुरोलाल आ मोतियोल, सात किलोमीटर कौलेज दूर रहने, साइकिल कीनलैन। दुनू गोरेक बीच जीवनक संगपनामे बढ़ोत्तरी भेलैन। अपनो आँखि-पाँखि दुनू गोरे ओहिना झाड़लैन जेना भोर होइत चिड़ै-चुनमुनी झाड़ैए। आँख-पाँखि ई झाड़लैन जे गाममे पहिल-पहिल अपने दुनू गोरे छी जे कौलेजक आँखि देखलौं। ई दीगर जे अपने सभक भागे पौरुकाँ कौलेज खुजल, नहि तँ ओहिना रहितौं जहिना मिडिल-पास केलाक पछाइत झूठन काका मुंशीयागिरी करै छैथ आ फूसन काका गामक धिया-पुताकेँ ट्यूशन पढ़बै छैथ। हाथमे करबीरक छड़ी तँ अपनासँ डेढ़िया रखै छैथ मुदा हुट्ठा अपनो ने पढ़ल होइ छैन। जँ पढ़ियो लेता तँ हुट्ठाक माने थोड़े बुझता जे हुट्ठाक उपयोग केतए होइए। खाएर जे छी, गाम-गाम छी, समुद्र छी। समुद्रक माने ई नहि बुझब जे हम प्रशान्त महासागर कि लाल सागरक आकि कारी सागरक चर्च करै छी। ..चर्च एतबे करै छी जे जैठाम कट्ठा भरिक पोखैरमे हजारो माछो आ हजारो आनो-आन जीव-जन्तु अपन-अपन बास स्थलबना बास करैए माने जीवनो जीबैए, तैठाम मनुक्ख तँ मनुक्ख छिआ जे अपन बुधिक बखारी आ विवेकक सखारी सजौनहि छैथ।

नव कौलेज खुजने अपन वृहत् रूप पकड़ै दुआरे माने शिक्षण बेवस्थामे प्रगाढ़ता आनै दुआरे कौलेजमे ट्यूटोरियल क्लास सेहो चलैनमे आबिये गेल छल। जहिना सात दिनपर एकटा ट्यूटोरियल क्लास भेने शिक्षको आ छात्रोक परिचय-पात बढ़ल तहिना सवुरलाल आ मोतीलालक बीच बढ़लैन। एक तँ गौआँ, दोसर एक कौलेज आ एक क्लासक विद्यार्थी। किए वेचाराक मनमे उठितैन जे एक-विद्यार्थी दोसरकेँ जहिना राही बुझि राह पकड़ै छैथ तहिना दोसर राह रोधी नहि छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो अछिए।

ओना, हजारी बाबूकेँ, हजारी प्रसाद द्विवेदी- हिन्दीक मूर्धन्य साहित्यकार, जनिक जीवनधाराकेँ रवी बाबू माने रवीन्द्रनाथ टैगोर, शान्ति निकेतनक भूमिपर मोड़ि मानवीय रूप गठित कऽ देलकैन। एहेन बनबैक शक्ति तँ मनुक्खमे अछिए।

संयोग बनल, ट्यूटोरियल क्लास सन क्लास छात्र सभकेँ भेटलैन। शिक्षक भेला निर्णायक, दू छात्र भेलौं पक्ष-विपक्षक कर्ता। जहिना कोनो वस्तुकेँ जखन दुनू दिससँ निहारल जाइए तखन ने ओकर असल रूप देखै-बुझैमे अबैए। दुनू हिन्दी साहित्यक विद्यार्थी तँए मध्ययुगक भाषा आन्दोलनपर प्रश्न उठि गेलैन।

सवुरलाल साहित्यक भाषासँ जहिना आकृष्ट छला तहिना मोतीलाल गीत-कवित्त धारासँ आकृष्ट रहैथ। ट्यूटोरियल क्लासमे तेसर दिन दुनू गोरेकेँ भक्तिकाल आ रीतिकालक सीमा विवादपर प्रश्न उठलैन। सवुरलालक तर्क रहैन जे भक्तिकालसँ वैरागकालक जन्म होइत तैठाम श्रृंगारकालक जन्म केना भऽ गेल?

मोतीलाल रामचन्द्र शुक्लसँ प्रभावित, तँए भक्तिकालक पछाइत रीतिकालकेँ सोल्होअना मनसँ मानि रहल छला। मध्ययुगमे सम्प्रदायिक रूप सेहो सघन भइये गेल छल। एक दिस वैदिक पद्धतिक सामाजिक ह्रास तँ दोसर दिस अपन-अपन

सम्प्रदायक संग बुद्धदेव, महावीरक संग अनेको शंकराचार्य धरतीपर उतैर चुकल छला। धार्मिक सूत्रक अन्तर्गत अनेको सम्प्रदायक सघन रूप बनियेँ गेल छल। सिद्धसँ प्रभावित, नाथसँ प्रभावितक संग-संग निर्गुण आ सगुणक विचारधारा प्रवल भइये गेल छल। जहिना तुलसी आ सूर समार्गी माने सगुण मार्गी भेला तहिना कबीर आ जायसी निर्गुण मार्गी। ओना, दुनूमे सेहो भेद छैन, एक प्रेम मार्ग अपनौलैन तँ दोसर ज्ञान मार्ग। जायसी प्रेम मार्ग अपनाए सूफी सम्प्रदाय चलौलैन आ कबीर अपन निर्गुण ब्रह्मक आधारपर निर्गुण सम्प्रदाय। भाय, सत्य तँ सत्य छी।

ताड़क गाछ जकाँ बिनु डारि-पातक अछि, तेकरा जँ झमटगर बनेबै, माने डारि-पातसँ भरि देबै, तइ बीचमे अन्तर एबे करत किने। खाएर जे अछि से अछि तइसँ सवुरेलाल आकि मोतियेलालकेँ कोन मतलब छैन। मतलब छैन जे मध्ययुगक भाषा-साहित्यक विचारपर विमर्शसँ।

संयोग बनल, ग्रियर्सन सहाएब, जे भाषा विशेषज्ञ छला। मधुबनी अनुमण्डलमे, करीब उन्नैसमी सदीक आठम दसकमे एस.डी.ओ. बनि एला। ओ मैथिली भाषाकेँ जे विभाजित केलैन तइमे 'जोलहा मैथिली'क चर्च सेहो केने छैथ।

ट्यूटोरियल क्लासमे सवुरलाल प्रश्न उठौलैन जे जोलहा भाषाकेँ जोलहा जातिक भाषाक रूपमे ग्रियर्सन चर्च केलैन आकि कबीरक भाषाकेँ 'जोलहा मैथिली' कहलैन? जोलहा जाति सिर्फ मिथिलेमे नहि, आनो-आन राज्यमे अछि। ओहुना मिथिलांचलोमे गाम-गामक भाषामे भिन्नता अछिए। तेकरा देखि-बुझि कऽ 'जोलहा मैथिली' नाम रखलैन आकि गाम-गाममे पसरल निर्गुण गीतो-भजन आ कबीर मतक माननिहारो छथिए, तेकरा आधार बना ग्रियर्सन कहलैन? ओना, कबीरोकेँ लोक जोलहे जातिक बुझै छैथ।

उदयपुरकेँ पहिल-पहिल दूटा स्नातक (बी.ए.) भेटल। गीत-भजनमे तँ मिथिलाक एक-सँ-एक विद्वत समाजक चर्च अछि, मुदा कोनो गाममे विद्याक बाढ़िक मुँह केतए मोड़ि देल गेल अछि, तेकरो चर्च ने हेबा चाही।

कौलेजसँ निकलला पछाइत दुनू गोरे माने सवुरोलाल आ मोतियोलाल एक शर्त्तपर जीवन भरिक दोस्ती केने छला। शर्त्त ई जे दुनू गोरे संकल्पक संग शपथ खेलैन जे दुनियाँक संग जेहेन बेवहार हुअए मुदा दुनू गोरे ने एक-दोसर लग झूठ बाजब आ ने अहितकर काज करब।

ताड़ी दोकानक दोस्ती नइ ने छिऐ जे बरियातीक जेरमे दोस्ती भेल आ बरियाती बनि विदा भेलौं। लोरिकक संकल्प ने देखए पड़त जे लोरिकक भात खाएत ओ बरियात पूरत। भात आ भक्त बनब चिल्का-बच्चाक खेल नइ ने छी।

सवुरलालक परिवार समाजसँ जुड़ल परिवार रहने सामाजिक रूप पकैड़ लेलक। मुदा मोतीलालक परिवार अड़ोस-पड़ोसक परिवारक रूपसँ प्रभावित भऽ नोकरीक, तहूमे सरकारक प्रशासनिक विचारधारा, दिस बहि चुकल छेलैन। मेहनती मोतीलाल, आरक्षणक लाभ उठा प्रशासनिक परीक्षा पास केलैन।

पैंतीस सालक नोकरी जीवनमे मोतीलाल अपन जीवन बिसैर नोकरीकेँ जीवन बना बितबए लगला। जिनगीमे की जरूरत अछि आ केते जरूरत अछि, अपन जीवनक रूप बना सवुरलाल सामाजिक जीवन धारण केलैन। जखन कि मोतीलालकेँ बरखा पानिक बुलबुला जकाँ छोट-पैघ अनेको समाज भेटलैन मुदा स्थायी समाज सवुरलाल जकाँ नहि भेटलैन।

जहिना दुरगमनियाँ कनियाँकेँ सासुर बास भेला पछातियो

अपन गाम-समाजक, पिताक गाम-समाज, सदिकाल मनमे रहै छैन मुदा समयक संग चलैत-चलैत नैहरकेँ बिसैर सासुरक रंगमे रंगि अपन घर-दुआर, सर-समाज बुझए लगै छैथ तहिना मोतीलालकेँ नोकरीक शुरू दिनमे भेलैन।

नोकरीकेँ नोकरी बुझि अपन जन्मो स्थान आ जन्म स्थानक स्थायी बासी बनि जीवन धारण करैक विचार मनमे बनले रहलैन। शुरू-शुरूमे ब्लौकक जिम्मामे मोतीलाल बी.डी.ओ. बनि काज केलाह। निच्चाँ-ऊपरक धार देख, माने कार्यालयक चपरासी-किरानीसँ लऽ कऽ ऊपरक, माने शासनक ऊपरका जिम्मेदार शासनक रूप-रेखाक अध्ययन सेहो केलैन। मुदा ओही धाराक अपन कार्य-प्रणाली बना पछाइत अपनाकेँ सम्मिलित कऽ लेलैन। गाम-समाजक बीछल लोक प्रशासनमे रहितो मोतीलाल ई नहि बुझि सकला जे कम लोकक शासन जाधैर बेसी लोकपर रहत ताधैरिक वातावरण विषाक्त रहबे करत।

संयोग बनल, 'इन्दिरा आवास'क योजना घर बनबैले चलल। जहिना पैजामा पहीरिनहार अपन पैशाव करैक गड़ सेहो बना लइ छैथ तहिना प्रशासनिक पदाधिकारी सेहो पाइ खेबाक गड़ अपन बनाइये लइ छैथ। शुरूमे मोतीलालकेँ किछु भियौन जरूर लगलैन मुदा समाजो तँ समाज छीहे। समाजक प्रभाव बेकतीपर पड़िते अछि। ओही प्रभावसँ प्रभावित भऽ मोतीलाल 'इन्दिरा आवास'मे नीक पाइ बटोरलैन। गामक सिनेह रहबे करैन, पहिलुके उझुक्कामे एक बीघा खेत गाममे कीनि लेलाह। नोकरीक दुइये सालक पछाइत बीघा भरि खेत कीनबकेँ समाज अधला नहियेँ बुझलैन। कोन जरूरी समाजकेँ छेलैन जे बुझितैथ कोनो नोकरीक दरमाहा ओइ पदक अनुकूल भेटैए, जइसँ परिवारक भरण-पोषण, स्तरक हिसाबसँ भऽ सकत। जहिना आनो-आन गाममे सरकारी नोकरी

पौनिहार जखन साधरण पदबला तीन-मंजिला पक्काघर आ बैंक-बैलेंसक संग जमीनो –जत्था कीनबे करैए तैठाम तँ प्रशासनिक पदक तँ अपन रूतबा अछिए।

शुरूमे जहिना मोतीलाल गाम-समाजकेँ सर्वोपरि बुझि अपन ऐगला जिनगी बितबैक मनमे रखने छला तहिना ओ विचार समटा कऽ संग बदलैत-बदलैत एते बदैल गेलैन जे गामसँ बिमुख भऽ मोतीलाल शहरेमे रहैक विचार बना लेला। नोकरीक जीवनमे मोतीलाल दर्जनो जिलाक कार्यालय देखलैन मुदा स्थायी बास बनबैक विचार राजधानीएमे केलैन। माने राँचीमे।

माता-पिताकेँ परोछ भेने, माने मृत्युक पछाइत मोतीलाल अपन पैतृक सम्पैत बेचलैन तँ नहि मुदा मरनासन्न बनाइये देलैन। जे किछु सम्पैत छलैन ओ एक गोटाकेँ जिम्मा लगा देलखिन। शुरूमे अपने कहियो-काल गाम ऐबो करैथ, मुदा पछाइत सेहो बन्न कऽ लेलैन।

जिनगीक तँ दुनू धार अछिए। जहिना एक धार कुकर्म दिसक अछि तँ दोसर सुकर्म दिसक सेहो अछिए। अखन हम कर्मक रूप अकर्म, विकर्म, कर्म संयास इत्यादिक चर्च नहि करब। अखन एतबे कहब जे मोतीलालकेँ जहिना बच्चा सभकेँ पढ़बै-लिखबैमे अभाव कहियो नहि भेलैन तहिना बेटी सभक बिआहो-दान आ अपनो जीवनमे अर्थक अभाव कहियो ने भेलैन। जहिना दुनू बेटी इंजीनियर बनि इंजीनियरसँ बिआह भेला पछाइत अपन इंजीनियरक जीवन गढ़ि लेलकैन तहिना दुनू बेटो प्रशासनिक नोकरीक जीवन बिताइये रहल छैन।

सेवा-निवृतिक पछाइत मोतीलाल जिनगीक ओइ पड़ावपर पहुँच गेला जैठाम दोसरक जरूरत जीवनमे होइए। ओ पड़ाव छी,

बच्चा आ वृद्धक जीवन।

एक तँ संयमित जीवन नहि रहने दुनू परानी मोतीलालक शरीर दर्जनो बीमारीक बासस्थल भइये गेल छैन, जइसँ जेतबो शक्ति उमेरक हिसावसँ शरीरमे रहितैन सेहो ने छैन, तैसंग एक परिवारक[1] जीवन चलाएब सेहो छैन्हे। ओना, पाइ-कौड़ीक अभाव नहि रहने नोकर रखने छैथ, मुदा केतबो दरमाहा नोकरकेँ किए ने देब मुदा ओ तँ परिवारक आंगिक सम्बन्ध जकाँ नहियेँ भऽ सकैए।

सेवा निवृतिक तीन सालक पछाइत मोतीलालकेँ गामक पारिवारिक जिनगी मोन पड़लैन।

मोन पड़लैन ओहन परिवार जइ परिवारमे वृद्धजन अपन जीवनक विराट रूपमे भ्रमणो करै छैथ आ अपन विराटरूपक गुण सेहो बुझबे करै छैथ, जइसँ जीवनक सार्थकता सोझमे अबैए। माने ई जे जँ परिवार अभावग्रस्त, अभावग्रस्त आ बिनु अभावग्रस्त परिवारक निर्माण विचारक धरातलपर होइए नहि कि आर्थिक धरातलपर। ओना, आर्थिक धरातल आजुक परिवेशमे महत्वपूर्ण स्थान बनाइये नेने अछि मुदा ओ तँ मात्र एक साधन छी, नहि कि जीवन। तहूमे विचारवान परिवार अपन ओइ साधनकेँ, माने आर्थिक साधनकेँ, जीवनक उत्पादित श्रमक संग ओइ रूपेँ अपन जीवनकेँ जोड़ि लइते छैथ, जइसँ मनमे कहियो अर्थ समस्या बनि उठबे ने करै छैन।

समाज मोन पड़िते मोतीलाल मने-मन संकल्प लेलैन जे राँचीक सभ किछु बेचिकऽ गाम चलि जाएब। गामोमे सभ तरहक नोकर भेटते अछि, तहूमे जँ अपन आंगिक परिवारक किनको अपन समांग, माने सम्पतिक भविष्यकर्ता बनाकऽ अपना लेब तँ

[1] **पति-पत्नीक**

जरूर ओहो अपन बुझि अपना जकाँ सेवा करबे करत। एकाएक मोतीलालक विचारमे उतरलैन जे गाम-समाज अखनो वएह समाज छी जे पोसपुतोकेँ जीवनक अन्तिम क्रिया तकक भागी बनैबते अछि। एकाएक मोतीलाल मने-मन अपन पैतृक समाजमे भ्रमण करए लगला। भ्रमणक दौड़मे मोतीलालकेँ मोन पड़लैन अपन बालसंगी सवुरलाल। सवुरलाल मनमे ऐबते मोन पड़लैन दोस्तीक ओ संकल्प जे ‘एक-दोसर’क अहित नहि करब। अपन संकल्प मोन पड़िते मोतीलालक मनमे तृप्तिता जगलैन। जइसँ मनक उद्वेग उग्र भेलैन। जिनगीक विचारक धारमे मोतीलाल कुइद पड़ला। दुनियाँमे जँ एकोटा दोस्त भऽ जाए तँ दुनियाँक पैघ घाट पार करैमे सेहो कोनो बाधा नहि हएत।

पत्नीकेँ शोर पाड़ि मोतीलाल बजला-

“हवाइ सेवा शुरू भेने गाम आ शहरक दूरी कमि गेल। आब कि पहिलुका रूतबा रहल जे राँचीसँ गाम जाइमे अट्ठारह घन्टा लागत। घन्टा भरिमे गाम पहुँच जाएब। हम गाम जाइ छी। काल्हि आएब।”

पतिक गामक उत्साह देखि भवानीकेँ मिसियो भरि मनमे नहि उठलैन जे असगरे केना रहब। तहूमे काल्हि एबे करता। भवानी बजली-

“गाममे आब अपन रहल की। जेहो खेत-पथार छल सेहो सुनै छी जे चौर-चाँचर भऽ गेल, तखन रहब केतए?”

जहिना पचासो बर्ख पूर्वक संगी वा सम्पैत भेटला पछाइत बीचक समय अपने मटियामेट भऽ जाइए तहिना मोतीलालकेँ भेलैन। बजला-

“गाममे अखनो ओहन बालसखा जीवित छैथ जे पहुँचते

हृदयसँ लगा लेता।”

भवानी- “तरखन जा कऽ देखियौ।”

मोतीलाल गाम पहुँच सवुरलाल ऐठाम एला। अखनो गाम-गाम छी, कुशल-क्षेम पुछैसँ पहिने अभ्यागतक आगूमे एकलोटा पानि ऐबते अछि। सवुरलाल घरपर नहि छला। अपन देखल-सुनल परिवार मोतीलालकेँ छेलैन्हे। दरबज्जापर राखल कुरसीपर बैसबे केलाह कि सवुरलाल सेहो किम्हरोसँ एला। चेहरासँ तँ सवुरलाल धकमकेला मुदा बोलीसँ परेख बजला-

“दोस.!”

“हँ दोस.! आब गामेमे रहब।”

मोतीलालक बात सुनि सवुरलालक मनमे उठलैन, गाममे रहता तँ आरो बढ़ियाँ। कहलो गेल अछि जे भरि दिनक हेराएल जँ साँझो पड़लापर घर पहुँच जाइ छैथ तँ ओ हेराएब नहि भेल। ..सवुरलाल बजला-

“गाम कि केकरो बाँटल छी, सभक छी, सभकेँ रहैक अधिकार अछिए। तरखन तँ जेहेन कर्म तेहेन जीवनक मर्मक संग लोक जीविते अछि।”

❑

शब्द संख्या : 2893, तिथि : 10 दिसम्बर 2021

घरैया मूस

आने दिन जकाँ भोरहरबामे नीन टुटल। नजैर अपन अतीत-भविस दिस बढ़ल कि मनमे भक्क-दे उठल- भरिसक देहमे मूस लागि गेल अछि तँए निरर्थकमे पानि जकाँ समय दहोंदिस भागि रहल अछि। ऐगला भागब दिस ताकी तँ बुझि पड़ए बेशुमार भागि रहल अछि आ पैछला दिस देखी तँ बुझि पड़ए जे बिनु बेशुमार समय ससैर रहल अछि। तइ बीचमे पड़ल मन भकुआ गेल तँए दुनू हाथक तरहत्थीसँ आँखिमे पोछा लगेलौं कि भक्क-दे मोन पड़ल आजुक दिन।

आजुक दिन नाजुक अछि कि काजुक? भोरसँ साँझ धरिक समयकेँ जखन हिया कऽ देखलौं ते बुझि पड़ल जे अपन दिने-दुनियाँ रौदिया गेल अछि। अकारथ जिनगी पानिमे बहि रहल अछि। चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे ने एको गोरेसँ जीवन-मरणक गप-सप्प होइए आ ने एको गोरेकेँ जीवनमे संग-साथ दऽ मरणकेँ जीयन बना रहल छी। हँ, ई लाजो नहियेँ हएत जे केकरो जीवनकेँ मरण बना रहल छिऐ। एकाएक मनमे उठल- समाजमे जँ कुम्भ-करनी चलाएब नहि सीखब तँ समाजक संग चलि केना पएब? कुम्हारे ने पण्डित भेला.!

जहिना मृत्युक भयसँ लोक जीवन दिस नुकाइले भागैए तहिना भागैक विचार केलौं, मुदा अपने मन रोकैत कहलक- 'मृत्युक भयसँ जहिना जोगी-जपी जिनगीकेँ चुहैटकऽ पकड़ै छैथ,

तहिना किए ने अपनो पकैड़ ली। लगले ओछाइनपर सँ उठि कऽ ठाढ़ भेलौं।

आइ आठ दिन भऽ गेल मंगल भाय कहने छला जे एक पनरहियासँ विकास काका गुम-सुम भेल दरबज्जापर बैसल रहै छैथ आ अपन दिन-दुनियाँ ले झखैत रहै छैथ.! मन कहलक अपन दिन-दुनियाँ ले ते सभ झखिते अछि, विकासो काका की तइसँ हटल छैथ। फेर एकाएक अपने मन धकलैत कहलक- ‘यएह छी निरलजपना.!

जखन विकास काकाकेँ सामर्थ्य छेलैन, माने शारीरिक शक्ति, तखन दिनमे तीन-तीन बेर एकठाम बैस गपो-सप्प करै छेलौं आ संग मिलि खेतियो-पथारी करै छेलौं, मुदा आइ जखन हुनकर सामर्थ्य कमलैन अछि तखन आठ दिन पूर्वक समादकेँ अखनो मठरियौने छिऐन। रोगे-वियाधि छी जँ कहीं किछु भइये जेतैन तखन हमरा सन संगी लऽ कऽ की करता.!’

अपने मनमे ग्लानि भेल। जँ अपन हीन कर्म देखि मनमे ग्लानिसँ पश्चाताप नहि भेल तँ निरलजपना कहब केकरा। मने-मन बुझि पड़ल जे ठीके अपने कोढ़िक श्रेणीमे निच्चाँ उतैर रहलौं अछि। भरिसक मनक मूस विवेककेँ चाटि रहल अछि।

मनकेँ तानैक कोशिश केलौं, जहिना कबीर बाबा तानी-भरनी तानै छला तहिना तानलौं कि मन संकल्पित भेल। भेल तँ एतबे ने जे जँ नमहर पिआक छी तँ नहि पीबाक संकल्पक गिरह बान्हि ली। बड़ भारी कोढ़ि छी तँ देहमे पानि चढ़बैक संकल्पक गिरह बान्हि ली। आरो की अछि, बड़ बेसी सुतनमा छी तँ जगनमाक संकल्पक गिरह मनमे बान्हि ली।

मन मानि कबुल कऽ लेलक जे औझुका दिनक पहिल काज भेल विकास काकासँ भेँट करब। एक तँ ओहुना हुनका लग बैसला

पछाइत घन्टा भरिक समय केमहर देने बहि जाइए तेकर ठेकान नहि, तैठाम आइ आठ दिनपर भेँट हएब, तँए समयक कोनो ठेकान थोड़े रहत। तहूमे विकास कक्काक तेहेन अपन बेवहारिक जीवन छैन जे तुके-तुक चाह-पान आ तुके-तुक खेनाइ-जलखैक ओरियान रहिते छैन। तँए नीक हएत जे पत्नीकेँ कहि दिऐन- विकास काका ऐठाम जाइ छी। किए तँ हुनकर मन जेना गुमसुमा गेलैन अछि। मुदा अपने मन मनही केलक जे स्त्रीगणक कानमे एहेन गप देब उचित नहि हएत। जखनेसँ कानमे पड़तैन तखनेसँ अपन घर-अँगनाक काज छोड़ि गाम बान्हए लगती। एक तँ अपना नइ रहने अपन काज रूकत तैपर जँ ओहो, माने पत्नियोँ, गामे बान्है पाछू लागि जेती तखन अपन परिवारक की हएत? तहूमे गामे बान्हब छी। जेते मुँह तेते रंगक बोल आ जेते हाथ तेते रंगक काजक संग जेते रंगक पएर तेते रंगक डेगो अछिए.! नान्हिटा संकल्प नहि ने छी, जे चारि मुहसँ एक विचार निकालब। तहूमे अपना ऐठाम, जैठाम चीतसँ सोझे पट कऽ देल गेल अछि। शंकराचार्यक संकल्प तोड़ैले राजदरबार की सभ केलक.? कहैमे आसान अछि जे फल्लाँ तीनियेँ डेगमे धरती नापि लेलैन मुदा तीन श्रेणीक मनुक्खकेँ परेख लेब आसान अछि? खाएर जे अछि तइसँ अपना की मतलब आ मतलबे किए रहत? जखन अपने जनै छी जे मनुक्ख अपन सम्भावनाक मालिक अपने छी। एकर माने ई नहि जे जँ खजाना भेटए तँ लूटि ली। हँ, जेते खगता अछि ओकरा नहि पुरौने जिनगीक गति रूकत। तँए, केहेन सम्भावनाक आशा करब आ केहेन सम्भावना नल-नील[2]क छेलैन जे पाथर समुद्रमे फेकलैन? यएह ने भेल जीवन जे अपन ऐगला पीढ़ीक सम्भावना ले केहेन

[2] **रामायणिक नल-नील**

पाथर समुद्रमे फेकब आ अपन सम्भावना ले की करैक अछि।

ओना, मनमे अखनो धरि होइते छल जे पत्नीकेँ नहि कहिऐन, जँ कहीं एहेन झोंटहाक भाँजमे विचार जाएत तँ अनेरे ओ अपन अलंकार पहिरा बजबे करती जे विकास काका मरि गेला। भाय, जाबे मनुक्ख धरतीपर रहत ताबे विकास हेबे करतै, भलेँ जेम्हर होउ। कियो ब्रह्मकेँ सत्य कहि दुनियाँकेँ झूठा बनाबए आकि कियो दुनियाँकेँ सत्ये किए ने कहए..।

मनमे भेल जे जखन विकास काका ऐठाम जाएब आ पत्नीकेँ नहि कहि देने रहबैन आ जँ कहीं रस्ते-पेरा आकि हुनके ऐठाम माने विकासे कक्काक ऐठाम किछु भऽ जाए, देहे छी कुम्हारक काँच वर्तन जकाँ, हजारो रंगक वियाधिक घरक कारणेँ अछिए। जँ एको रत्ती टुनकी लागि जाएत कि टन-दे फुटि जाएत। पत्नीकेँ कहलयैन-

“विकास काकासँ भेँट भेना बहुत दिन भऽ गेल। गाममे आब वैहटा पुरान लोक रहला, तैठाम जँ अठ-अठ दिनक समाद पछुएने रहब से अपना सन भेल?”

अपन विचारक प्रवाहमे आकि अपन पति-पत्नीक पतिव्रता देखबैत, मुदा बजैक क्रममे पत्नी बजली-

“से तँ नहियेँ भेल। मोन अछि ने, बाबू जखन अस्सी बर्खक ऊपर भऽ गेल छला तखन जे हुनका लगमे एक गोटा नहि रहै छेलैन आ ओ गुड़ घाक पीबक टनक जकाँ अर्ड़ाहैट मारै छला.? तहिना ने सभकेँ होइत हेतैन।”

पत्नीक विचार सुनि मन जेना भरि गेल। आने जकाँ अपनो पत्नीसँ छुट्टी मांगैत बजलौं-

“जाइ छी।”

विदाहो भेलौं आ पाछू उनैट-उनैट ताकबो करी जे पत्नी किछु

बाजि तँ ने रहली अछि। मुदा से सभ नहि देखि कनी आगू बढ़लौं आ पाछू उनैट तकलौं कि जेना बुझि पड़ल जे ओहो हमरा दिस देखि किछु आदेश देमए चाहि रहली अछि। मुदा से सभ किछु ने, खाली आँखिक इशारासँ विकास काका-लग जाइले कहि रहल छेली।

अपन घरक सिमान टपिते मनमे उठल जे जखन विकास काकासँ भेँट करए जा रहल छी तखन केना कहबैन जे अपना किछु ने बुझल अछि। तँए नीक हएत जे रस्तामे जँ कियो भेटता तँ पुछि लेबैन जे कक्काक की समाचार छैन। कमसँ कम एते तँ हेबे करत किने जे अखन तक काका जीवित छैथ। स्वस्थ कि अस्वस्थ छैथ तेकर निवारणक उपाय तँ आइयो भऽ सकैए..।

संयोग नीक रहल। मुनेसर भाय भेटला। विकासे कक्काक घर दिससँ अबैत रहैथ। पुछलयैन-

“भाय, विकास कक्काक की समाचार छैन?”

मुनेसर भाय बजला-

“पुरान लोक रहने हाले-चाल की रहतैन.! विकास काका करवन छैथ आ करवन नहि छैथ, तेकर कोनो ठीक नहि।”

मुनेसर भाइक विचार सुनि अपने ठकमुड़ा गेलौं जे ई की भेल? जहिना जिनगीक चारि अवस्था–बाल, ढेरबा, सियान आ वृद्धा–होइए, मुदा सुननिहारो आ देखनिहारो जहिना खिचड़ियो आ खीरोकेँ एक्के दाइबसँ, बिना दुनूक गुण-धर्म बुझनहि, लाइर दइ छैथ। तहिना बुझि पड़ल।

केहनो गुप्त विचार रहए, मुदा ओकरा नमहर बनौलासँ किछु-ने-किछु गन्ध आबिये जाइए, छोट बनौलासँ ने नीको विचार नुका जाइ छै। यएह सोचि मुनेसर भायकेँ पुछलयैन- “से की मुनेसर

भाय?”

मुनेसर भाय मने-मन विकास कक्काक प्रति तेते आह्लादित भऽ गेल रहैथ जे विचार बेसम्हार भऽ गेलैन, जनु तँए उनटा कऽ वएह पुछलैन-

“जीवन, तोहीं कहह जे आब हुनका सभक, माने विकास काका सभक, अशे केते करब। पचासी-नब्बे बर्खक अवस्था भेलैन। जे ओहन रगड़ी रहला सएह ने एते उमेर धरि सही-सलामत जीब सकै छैथ आकि जेकरा बच्चेसँ मिरगी उठत ओ जीब सकैए।”

मुनेसर भाइक विचारक प्रवाहमे अपनो भँसिया गेलौं। बजा गेल- “से तँ नहियेँ जीब सकैए।”

ओना, पछाइत मनमे आबि गेल जे जँ बच्चाकेँ मिरगी रोगक निदान करा जीवनक सीखपर चढ़ौल जाए तँ किए ने ओहो अपन शेष जिनगीकेँ एक सफल कुम्हकार जकाँ सृजन कऽ सकैए। मुदा अपने मन चेतलक। चेतलक ई जे अपना मनमे ने एहेन विचार उठि रहल अछि, कोनो जरूरी अछि जे ओहने विचार हुनको मनमे माने मुनेसरो भाइक मनमे उठल हेतैन.! हँ, उठि सकै छेलैन जखन दुनू गोरे एक रस्ताक चालिक रहितौं। से तँ नहि, मुनेसर भाय तेहेन जिद्दी छैथ जे अखुनका डॉक्टरो आ नवपीढ़ीक लोको मनाही करैत रहि गेलैन जे मुनेसर भाय, पान-मखान मिथिलाक पुरान परम्परा भऽ गेल। पान नहि खाउ। पान खेलासँ दाँतो नष्ट हएत आ मासाला (जर्दा) खेने कैंसर सन रोगोक सम्भावना बनैए, तँए पान खाएब छोड़ि दियौ। मुदा से ओ थोड़े सुनता। तर्कपर तर्क अछिए आ ओही तर्कमे फर्क सेहो ने अछि, से के बुझता.?

अपनो मन मानियेँ गेल छल जे विकास काका जीवित छैथ। अखन हम ई नहि कहए चाहै छी जे किसानक लेल जे देशक

पहिल-दोसर पंचवर्षीय योजना जेहेन रहल ओ ठमैक कऽ पुन: छठम-सातम योजनामे थोड़े मुँह उठौलक जइसँ अन्नक समस्या देशक मेटा गेल। मुदा आजुक परिवेशमे किसानक की स्थिति छैन जे अखनो मिथिलांचल-वासीकेँ पड़ाइन लगले छैन। जखन कि दुनियाँक बैंक घर-घर पहुँच रहल अछि.?

गौर करैक विषय अछिए जे जहिना जीवन आसान भेल अछि तहिना भारी सेहो भइये गेल अछि। देशक जे विषमता अछि, जे दुनियाँमे सभसँ बेसी बिनु पढ़ल-लिखल (मूर्ख) लोक अपना देशमे छैथ, मुदा ई लाजिमी विचार किए हएत.? बजलौ-

“मुनेसर भाय.! अहाँ आगू बढ़ू, हम कने विकास काकासँ भेँट केने अबै छी।”

जिद्दी लोक मुनेसर भाय छथिए, टोन दैत बजला-

“कोनो विशेष बात की?”

बजलौं-

“बैसल-बैसल गामपर नीक नइ लागल तँए टहैल गेलौं।”

मुनेसर भाय बजला-

“काजक बेरमे टहलब नीक भेल?”

बजलौं-

“की करितौं भाय, तेहेन ने कोढ़िया रोग आबि गेल अछि जे अनेरे ने सभ कोढ़ि भऽ बीमार पड़ि जाएब। ने मुँह उठा बाजि सकै छी आ ने अपन बेथा-कथा केकरो कहि सकै छिऐ।”

जहिना कोनो पाकल आम देखि गोलबाहि करैक विचार करै छी, माने पाकल आमकेँ पबैले, आ जँ पहिलुके गोलामे आम टुटि खसि पड़ैए तखन जहिना एक दिस गोलबाहिसँ बाँचवक खुशी आ

दोसर दिस आम पबैक खुशी मिलि एक भऽ मनकेँ दहला दइए, मुदा की दुनू खुशीक जड़ि एक्के अछि? नहि, एकटामे श्रम नुकाएल अछि तँ दोसरमे फल। भलेँ अहाँ बीचमे ईहो कहियै सकै छिऐ जे जँ आम तोड़ैक संकल्प मनमे नहि उठल रहैत तखन ने एहेन श्रमक सृजन होइत आ ने फलक आशा। ओना, श्रमक आशाकेँ फलोक आशा कहियै सकै छिऐ। संयोग नीक रहल, मुनेसर भाय बजला-

"जीवन, बड़ीकाल धरि विकासे काका लग हमहूँ छेलौं, अखनो जे हुनका बोलीमे टनटनी छैन से कहल नइ जा सकैए।"

एक तँ अपनो विकासे काकासँ भेँट करए विदा भेल छेलौं, तैपर मुनेसर भाय तेहेन टनटनीक प्रयोग केलैन जे अपनो मन टनटना गेल। बजलौं- "से की भाय साहैब?"

मुनेसर भायकेँ पाकल परसाएल कटहरक सुगन्ध जेना खाइसँ पहिनहि मनकेँ भरि देलकैन तहिना खेबाक तृष्णे मेटा गेलैन। बजला- "विकास कक्काक टनटनी ओहने छैन जेहेन कियो अपन जिनगीकेँ रूआवी बना रूआवसँ चलैत अपन रूआवकेँ बचौने रहै छैथ हुनकेमे एहेन टनटनी रहै छैन, जीवन।"

मुनेसर भाइक विचार सुनि अपनो मन मानए लगल जे मुनेसर भाय साँचे कहि रहल छैथ। विस्मित होइत बजलौं-

"से तँ विकास काकामे छैन्हे.!"

अपन समर्थन पेब आकि कोनो दोसरे चाँकिये मुनेसर भाय आगू बढ़ैत बजला-

"तहूँ, अपना काजे जाह हमहूँ जाइ छी।"

ओना, मुनेसर भायसँ पिण्ड छुटि गेल मुदा विकास काकापर जखन नजैर पड़ल कि बीचमे फेर मुनेसर भाय आबि गेला। अपने मनमे उठल जे जँ विकास काका आगुएसँ पुछि दैथ जे जीवन तोरे

सभक आशापर अखन तक छी आ तोहीं सभ जँ आँखि मुनि लेबह जे अठ-अठ दिनपर भेँट हेबह, तखन अपन बेथा-कथा केकरा कहबै.? ओना, तर्क-पर-तर्क अछिए मुदा सत्यक कोनो तर्क नहि अछि। सार्वभौमिक नियम अछि जे मृत्यु शाश्वत सत्य छी, कर्म सत्य छी, काल सत्य छी, वस्तुक सोभाव सत्य छी। ..रस्तो चलैत रही आ मने-मन विचारितो रही। जखन ऐ देहकेँ बुधि ठकि सकैए, माने जखन कोनो काज करैकाल देहमे दर्द आबए लगैए तखन दोसर काज दिस बुधि बढ़ा पुन: काजमे लगा दइए, तखन तँ आन आने भेल। बुधियेक तँ करामात अछि। तैबीच विकास कक्काक घर लग पहुँच गेलौं।

विकास काका दरबज्जेपर बैसल रहैथ। हुनकर चेहरा उदास रहैन। बुझि पड़ल जेना चिन्तित भऽ किछु चिन्तन कऽ रहला अछि। आँखिक पीपनी सेहो खसल रहैन। कनी फरिक्केसँ बजलौं-

“गोड़ लगै छी, काका.!”

आँखिक पल उठबैसँ पहिनहि विकास काका कहलैन-

“नीके रहह.!”

‘नीके रहह’ तँ सभकेँ सभ कहिते छैथ, नाम कहाँ लेलैन? मनमे कनी गुनधुनी उठल। गुनधुन करैत मने-मन विचार करए लगलौं जे साँचे पता लगल जे विकास काकामे गुमसुमी बढ़ि गेलैन अछि। मुदा जहिना गुमसुमी रोग छी तहिना ओकर इलाजो तँ हेबे करत। अपने मन मानि गेल जे से तँ एकठाम बैस गप-सप्प केनहि भेटत।

अपन दुखनामा सुनबैत बजलौं- “काका, फेदरैत-फेदरैतमे पड़ल छी। किछु केने किछु ने बनैए।”

साधनामे रत योगी जकाँ अपन योग-क्रियाक रूप बदैल

विकास काका पुछि देलैन- "की फेदरैत-फेदरैतमे पड़ल छह, जीवन?"

ओना, अपना मनमे जिज्ञासा छल जे विकास काका किए गुमसुम रहए लगला अछि, मुदा प्रश्न उनैट अपनेपर खसि पड़ल। अपन जिज्ञासाक बाटे बन्न हुअ लगल.! अपनाकेँ चेतलौं जे अपन विचारकेँ कमसँ कम समयमे कहि आगुएसँ पुछि देबैन जे काका अपना दिसक की हाल अछि। सुहाल अछि कि कुहाल अछि आकि फुहाल अछि। अपने ने भकजोगनी जकाँ भुकभुका जेता। सएह केलौं। बजलौं-

"काका, तेहेन बन्हौटा जिनगीमे पड़ि गेलौं हेन जे ने आगू सुझैए आ ने पाछूए।"

ओना, अपना जनैत सभ बात बजा गेल मुदा बजैकाल धियाने ने रहल जे सुननिहार चुपे-चाप सुनबेटा करता आकि अपन टीको-टिप्पणी करता। विकास काका बजला-

"आगू की नहि सुझै छह आ पाछू की नहि देखै छहक?"

जेना अतीतक जीवनमे खोजी जीवन पाबि भविष्यक कर्मक्षेत्रक निर्माण कऽ सकै छैथ तहिना कि अपनो सन अकलहूथ बुते हएत। मुदा से विकास काकाकेँ केना कहबैन। केतबो ढहलेल-बकलेल बानरे जकाँ मनुक्ख किए ने छी मुदा हनुमानजी जकाँ जखन देहमे रूइयाँ जग-जगाइए तखन हारियो मानब नीक हएत। कर्मसँ हारियो सकै छी, मुदा भाषण तँ ओहूसँ आगूक भइये सकैए। मुदा तइ सभकेँ तहमे तहियबैत बजलौं-

"काका, ठीके तुलसी बाबा कहने छैथ जे 'गृह कारण नाना जंजाला', जखन कोनो काज करि कऽ अबै छी तखन मनमे होइए जे निचेन भेलौं। मुदा लगले मनमे उठि जाइए जे फल्लाँ-फल्लाँ काज

पछुआ गेल। एहने जंजालमे जखन छी तखन करबे की करब।”

ओना, अपना मने ई सोचि बजलौं जे विकास काका बुझता जे जीवनकेँ आब कोनो समस्या नहि रहल। तँए अपन गुमसुम होइक बात बजबे करता। मुदा से भेल नहि, विकास काका गामक बात उठबैत बजला-

“ऐ बेरक चुनाव केहेन भेल, जीवन?”

अपना मनमे उठैत रहए जे विकास कक्काक गुमसुमीक की कारण छैन से बुझी। मुदा बीचमे तेसर बात आबि गेने अपन विचारे रोका गेल।

विकास कक्काक टटका प्रश्नक जवाबो नहि दए बसिया बनाएब उचित नहि बुझि संक्षेपमे बजलौं-

“काका, ऐ बेरक चुनावमे समुद्र मथन भऽ गेल।”

बजैक क्रममे तँ बाजि गेलौं मुदा अपने मन मनाही करए लगल जे अनेरे ने एहेन बात मुहसँ निकैल गेल.! जँ कहीं विकास काका पुछि देलैन जे नवका मथनमे समुद्रसँ कीसभ निकलल आ पुरना मथनमे कीसभ मथाएल? तखन केना कहबैन जे भोँटर सभ हँसी-खुशीसँ साग-पात जकाँ अपन अधिकार बेच अपन पचहत्तैर सालक स्वतंत्र देशक स्वतंत्रताक खुशी मना रहल छैथ।

संयोग नीक रहल। आइ धरिक जे तीन बेर समुद्र मथन भेल, तइ विचारकेँ रोकि आगू बढ़ैत विकासे काका बजला-

“जीवन, अपन जीवन टुटि गेल।”

‘अपन जीवन टुटि गेल’ सुनि मन अकबका गेल जे विकास काका कोन अट्ठाबज्जर बीचमे खसा देलैन.! कक्काक विचार तेना भऽ कऽ भाँजपर तँ नहि चढ़ल मुदा चौरीमे होइबला केशौरक पन्ना

जकाँ अपनो मनक पन्ना धरि खुजि गेल। खुजिते मनमे उठल जे अखन विकास कक्काक सोझामे, जे कोनो प्रश्न उठत से हुनकेसँ पुछि लेबैन। यएह तँ हुनकर धरोहर छिऐन, केतबो छिटता-बाँटता तैयो कि अपना कमतैन आकि बालुसँ गड़ल लोहाक छुरीपर आरो छुरिपन्ने चढ़त.! बजलौं-

"काका, जखन अहाँक मुहसँ निकलैए जे 'जीवन टुटि गेल' तखन हमरा सभक मुहेँ केतेटा अछि जे जीवन बँचल रहत।"

हमर विचार सुनि विकास कक्काक मन मधुएलैन, तइसँ बुझि पड़ल जे अपन टुटल जिनगीमे भरिसक किछु जान देखलैन। जखने जीवनमे जान अबैए तखने ने अनजान सुजान बनि सत्यकेँ पकैड़ लइए। बुझले बात अछि ने जे अजान जाबे धरि सुजान नहि बनत ताबे धरि बीचमे दू-चारिकेँ के कहए जे सइयो-हजारो दूत-भूत लपकबे करत।

संयोग नीक रहल हमर भँसियाइत विचारकेँ विकास काका अपन विचारसँ रोकैत बजला-

"जीवन, अरबो-खरबो जीवन दुनियाँमे अछि, तइमे अपन जीवन की अछि आ दुनियाँक जीवनसँ कोन रूपेँ सम्बन्धित छी, यएह ने भेल बन्धुत्वपन।"

विकास कक्काक विचार सुनि मन अलैस गेल, बजलौं-

"भने तँ काका कहलिऐ जे अपन जीवन टुटि गेल, मुदा केना टुटि गेल से अनका पुछबै आकि..?"

ओना, मुहसँ 'आकि' तक निकैल गेल मुदा बिच्चेमे मन बोलीकेँ चेतौनी दैत रोकि देलक। तँए चुप भऽ गेलौं।

बाल-बोध जकाँ बउसैत विकास काका बजला- "जीवन, तूँ

तँ सभ किछु देखिते छह जे खेती करै छी आ खेतिहर बनि ठाढ़ छी।”

आँखिक देखल जीवन विकास कक्काक अछिए, किए झूठ बजितौं जे नइ बुझल अछि। बजलौं-

“हँ, से तँ छीहे।”

विकास काका बजला-

“बंगला देशक लड़ाइयक पछाइत इन्दिराजीक समयमे किसानक बीच कृषि-जागरूकताक उदय भेल, तइसँ पूर्व किसानक बीच भूमिक समस्या छल।”

किछु-किछु बात बुझलो अछि आ किछु-किछु नहियोँ बुझल रहने बिच्चेमे बजलौं-

“से केना काका?”

विकास काका बजला-

“अखन बेसी निचेन नइ छी जे सभटा बुझा कऽ कहबह। मुदा दूटा बात कहब अनिवार्य बुझि पड़ैए, से कहि दइ छिअ।”

अपने अपन मुँह बन्न केने विकास कक्काक चेहरापर नजैर गाड़ने रहलौं। विकास काका बजला-

“कोसी-कमला इलाकामे चौर-चाँचर सभ दिनसँ बनैत आबिए रहल अछि, मुदा अपनो गाम चौरी बनि जाएत, ई कहियो ने सोचने छेलौं। देखै छहक ने।”

मन मानि गेल। बजलौं-

“से तँ जे अछि से देखिते छी।”

विकास काका बजला-

“अपन उमेर पचहत्तैर बर्खक भऽ गेल। सभ दिन खेतीक

औजार चलेलौं, खेतीए उजैड़ गेल तखन अपन जीवन टुटि कऽ चलि गेल आकि बँचले रहल।"

विकास कक्काक बात सुनि गामक स्थिति आँखिक सोझमे आबि गेल। हुनका चेहरा दिस तकैत रहलौं मुदा मुहसँ किछु ने निकलल।

❑

शब्द संख्या : 2791, तिथि : 22 दिसम्बर 2021

❑❑❑

❑❑

❑

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक ‘पंगु’ उपन्यासक पछातिक रचना-क्रम:

---------.

पंगु- (उपन्यास) लेखन तिथि: 11 मई 2018 सँ 6 जून 2018

749. ठका गेलौं- शब्द संख्या: 2052, तिथि: 18 जून 2018

750. हारि-जीत- शब्द संख्या: 3190, तिथि: 24 जून 2018

751. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या: 1095, तिथि: 27 जून 2018

752. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या: 1608, तिथि: 01 जुलाई 2018

753. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 5 जुलाई 2018

754. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या: 1584, तिथि: 9 जुलाई 2018

755. केकरो कियो ने- शब्द संख्या: 718, तिथि: 11 जुलाई 2018

756. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या: 1420, तिथि: 13 जुलाई 2018

757. उदय-प्रलय- शब्द संख्या: 1574, तिथि: 15 जुलाई 2018

758. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या: 1458, तिथि: 19 जुलाई 2018

759. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1471, तिथि: 21 जुलाई 2018

760. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या: 2576, तिथि: 31 जुलाई 2018

761. करतब- शब्द संख्या: 2132, तिथि: 04 अगस्त 2018

762. आमक गाछी- एक : शब्द संख्या: 3068, तिथि: 10 अगस्त 2018

763. आमक गाछी- दू : शब्द संख्या: 3553, तिथि: 17 अगस्त 2018

764. आमक गाछी- तीन : शब्द संख्या: 2484, तिथि: 22 अगस्त 2018

765. आमक गाछी- चारि : शब्द संख्या: 2291, तिथि: 28 अगस्त 2018

766. आमक गाछी- पाँच : शब्द संख्या: 2185, तिथि: 02 सितम्बर 2018

767. आमक गाछी- छह : शब्द संख्या: 4701, चोरा चान 12 सितम्बर 2018

768. आमक गाछी- सात : शब्द संख्या: 1805, तिथि: 15 सितम्बर 2018

769. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या: 924, तिथि: 19 सितम्बर 2018

770. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 25 सितम्बर 2018

771. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या: 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

772. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या: 1914, तिथि: 30 सितम्बर 2018

773. चटवाह- शब्द संख्या- 2134, तिथि: 4 अक्टूबर 2018

774. भगैतिया- शब्द संख्या: 2177, तिथि: 8 अक्टूबर 2018

775. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या: 2196, तिथि: 12 अक्टूबर 2018

776. यादास्त- शब्द संख्या: 1870, तिथि: 15 अक्टूबर 2018

777. हमर मेला चोरि भS गेल- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 19 अक्टूबर 2018

778. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या: 1922, तिथि: 23 अक्टूबर 2018

779. दिवालीक दीप- शब्द संख्या: 2422, तिथि: 29 अक्टूबर 2018

780. हारि केना मानब- शब्द संख्या: 2054, तिथि: 02 नवम्बर 2018

781. अप्पन गाम- शब्द संख्या: 1940, तिथि: 06 नवम्बर 2018

782. परिछन- शब्द संख्या: 2661, तिथि: 11 नवम्बर 2018

783. झूठ सपना- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 15 नवम्बर 2018

784. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या: 2530, तिथि: 19 नवम्बर 2018

785. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या: 2381, तिथि: 24 नवम्बर 2018

786. पुस्तकालय- शब्द संख्या: 2333, तिथि: 29 नवम्बर 2018

787. विचारभेद- शब्द संख्या: 2553, तिथि: 04 दिसम्बर 2018

788. एकरवा बानर- शब्द संख्या: 2793, तिथि: 09 दिसम्बर 2018

789. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या: 2759, तिथि: 14 दिसम्बर 2018

790. रंगमे भंग- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 20 दिसम्बर 2018

791. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या: 2590, तिथि: 17 जनवरी 2019

792. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

793. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या: 3473, तिथि: 03 फरवरी 2019

794. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या: 2225, तिथि: 07 फरवरी 2019

795. उखमज- शब्द संख्या: 3964, तिथि: 16 फरवरी 2019

796. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 19 फरवरी 2019

797. अगुताइ भेल- शब्द संख्या: 1054, तिथि: 22 फरवरी 2019

798. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या: 965, तिथि: 24 फरवरी 2019

799. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या: 995, तिथि: 25 फरवरी 2019

800. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या: 1051, तिथि: 28 फरवरी 2019

801. चितवनक शिकार- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 02 मार्च 2019

802. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या: 1086, तिथि: 04 मार्च 2019

803. धुआ साड़ी- शब्द संख्या: 1132, तिथि: 06 मार्च 2019

804. राजरोग- शब्द संख्या: 1274, तिथि: 10 मार्च 2019

805. संकल्प- शब्द संख्या: 1520, तिथि: 12 मार्च 2019

806. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 1349, तिथि: 15 मार्च 2019

807. काजक मोल- शब्द संख्या: 1090, तिथि: 16 मार्च 2019

808. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या: 1010, तिथि: 19 मार्च 2019

809. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या: 1091, तिथि: 22 मार्च 2019

810. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या: 987, तिथि: 25 मार्च 2019

811. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या: 966, तिथि: 27 मार्च 2019

812. लजगर लोक- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 29 मार्च 2019

813. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या: 1218, तिथि: 02 अप्रैल 2019

814. पगलपन- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 04 अप्रैल 2019

815. छलाननक सराध- शब्द संख्या: 996, तिथि: 06 अप्रैल 2019

816. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या: 1402, तिथि: 08 अप्रैल 2019

817. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या: 1463, तिथि: 16 अप्रैल 2019

818. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या: 1530, तिथि: 20 अप्रैल 2019

819. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 22 अप्रैल 2019

820. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या: 1198, तिथि: 25 अप्रैल 2019

821. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

822. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या: 998, तिथि: 29 अप्रैल 2019

823. सिकिया नेता- शब्द संख्या: 1023, तिथि: मजदूर दिवस, 2019

824. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या: 1475, तिथि: 04 मई 2019

825. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 06 मई 2019

826. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या: 1194, तिथि: 09 मई 2019

827. पुरुखक भर- शब्द संख्या: 1109, तिथि: 12 मई 2019

828. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1411, तिथि: 15 मई 2019

829. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 17 मई 2019

830. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या: 1004, तिथि: 19 मई 2019

831. कुभेला- शब्द संख्या: 992, तिथि: 21 मई 2019

832. देखौंस- शब्द संख्या: 945, तिथि: 23 मई 2019

833. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या: 1326, तिथि: 25 मई 2019

834. काजक मेहपन- शब्द संख्या: 947, तिथि: 27 मई 2019

835. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या: 941, तिथि: 29 मई 2019

836. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या: 1553, तिथि: 01 जून 2019

837. काजक धुनि- शब्द संख्या: 1065, तिथि: 03 जून 2019

838. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या: 1618, तिथि: 06 जून 2019

839. अगराही- शब्द संख्या: 944, तिथि: 08 जून 2019

840. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि: 11 जून 2019

841. भौक- शब्द संख्या: 1403, तिथि: 14 जून 2019

842. मनतरक पावर- शब्द संख्या: 1598, तिथि: 17 जून 2019

843. हाल-चाल- शब्द संख्या: 1519, तिथि: 20 जून 2019

844. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या: 1525, तिथि: 23 जून 2019

845. के मानत?- शब्द संख्या: 1721, तिथि: 29 जून 2019

846. दियादीक फेड़- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 03 जुलाई 2019

847. वाह रे आदत- शब्द संख्या: 1455, तिथि: 06 जुलाई 2019

848. कटबी सुइद- शब्द संख्या: 1435, तिथि: 09 जुलाई 2019

849. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या: 1948, तिथि: 13 जुलाई 2019

850. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1539, तिथि: 16 जुलाई 2019

851. कलेश- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 20 जुलाई 2019

852. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या: 2338, तिथि: 24 जुलाई 2019

853. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या: 2046, तिथि: 28 जुलाई 2019

854. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या: 1856, तिथि: 31 जुलाई 2019

855. भेँट-घाँट- शब्द संख्या: 1884, तिथि: 03 अगस्त 2019

856. कोसा- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 07 अगस्त 2019

857. दहेजक गाए- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 15 अगस्त 2019

858. चलती- शब्द संख्या: 1770, तिथि: 18 अगस्त 2019

859. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या: 1901, तिथि: 21 अगस्त 2019

860. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या: 2198, तिथि: 24 अगस्त 2019

861. अपन करखन्ना- शब्द संख्या: 1704, तिथि: 28 अगस्त 2019

862. लड़कपन- शब्द संख्या: 2150, तिथि: 03 अक्टूबर 2019

863. कुदृष्टि- शब्द संख्या: 2435, तिथि: 08 अक्टूबर 2019

864. हकार- शब्द संख्या: 2012, तिथि: 16 अक्टूबर 2019

865. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 25 अक्टूबर 2019

866. दोहरी दहार- शब्द संख्या: 2154, तिथि: 02 नवम्बर 2019

867. पसेनाक मोल- शब्द संख्या: 1748, तिथि: 06 नवम्बर 2019

868. बुढ़ापा- शब्द संख्या: 2122, तिथि: 10 नवम्बर 2019

869. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या: 2092, तिथि: 14 नवम्बर 2019

870. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या: 2416, तिथि: 18 नवम्बर 2019

871. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 22 नवम्बर 2019

872. काजक रोप- शब्द संख्या: 2679, तिथि: 21 दिसम्बर 2019

873. खटसमाद- शब्द संख्या: 2909, तिथि: 27 दिसम्बर 2019

874. जीबठपन- शब्द संख्या: 2577, तिथि: 02 जनवरी 2020

875. गोटी लाल- शब्द संख्या: 2364, तिथि: 06 जनवरी 2020

876. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या: 2361, तिथि: 11 जनवरी 2020

877. दहेज- शब्द संख्या: 2431, तिथि: 15 जनवरी 2020

878. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या: 2630, तिथि: 21 जनवरी 2020

879. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 2660, तिथि: 31 जनवरी 2020

880. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या: 2410, तिथि: 05 फरवरी 2020

881. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या: 2789, तिथि: 10 फरवरी 2020

882. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 16 फरवरी 2020

883. चुटका सुतरल- शब्द संख्या: 2445, तिथि: 21 फरवरी 2020

884. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या: 2255, तिथि: 25 फरवरी 2020

885. अग्नि परीछा- शब्द संख्या: 3097, तिथि: 01 मार्च 2020

886. आसीरवचन- शब्द संख्या: 2564, तिथि: 06 मार्च 2020

887. दहिबरी- शब्द संख्या: 2560, तिथि: 12 मार्च 2020

888. सघन बन- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 17 मार्च 2020

889. हुसैत लोक- शब्द संख्या: 2602, तिथि: 23 मार्च 2020

890. हुसि गेलौं- शब्द संख्या: 2574, तिथि: 28 मार्च 2020

891. झूठक झालि- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 01 अप्रैल 2020

892. दुष्टपन- शब्द संख्या: 2317, तिथि: 06 अप्रैल 2020

893. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 15 अप्रैल 2020

894. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या: 2232, तिथि: 20 अप्रैल 2020

895. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 24 अप्रैल 2020

896. लजाउ काज- शब्द संख्या: 2394, तिथि: 02 मई 2020

897. सुचिता- एक : शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020

898. सुचिता- दू : शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020

899. सुचिता- तीन : शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020

900. सुचिता- चारि : शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020

901. सुचिता- पाँच : शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020

902. सुचिता- छह : शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020

903. सुचिता- सात : शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020

904. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 01 अगस्त 2020

905. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या: 2757, तिथि: 06 अगस्त 2020

906. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या: 2711, तिथि: 11 अगस्त 2020

907. अपना जनैत- शब्द संख्या: 2881, तिथि: 16 अगस्त 2020

908. सुदृढ़ जिनगी- शब्द संख्या: 3460, तिथि: 23 अगस्त 2020

908. मुराम जगह- शब्द संख्या: 3575, तिथि: 31 अगस्त 2020

909. गामक सूरत बदैल गेल : शब्द संख्या: 3340, तिथि: 07 सितम्बर 2020

910. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या: 2808, तिथि: 13 सितम्बर 2020

911. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या: 2659, तिथि: 19 सितम्बर 2020

912. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या: 3132, तिथि: 26 सितम्बर 2020

913. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या: 3339, तिथि: 03 अक्टूबर 2020

914. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या: 3199, तिथि: 09 अक्टूबर 2020

915. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या: 2346, तिथि: 15 अक्टूबर 2020

916. जबुरिया कागज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 22 अक्टूबर 2020

917. बेटाक बिआह- शब्द संख्या: 3734, तिथि: 30 अक्टूबर 2020

918. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या: 3325, तिथि: 06 नवम्बर 2020

919. पोसलाक फल- शब्द संख्या: 3039, तिथि: 12 नवम्बर 2020

920. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या: 2933, तिथि: 18 नवम्बर 2020

921. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या: 3038, तिथि: 24 नवम्बर 2020

922. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि: 30 नवम्बर 2020

923. नवका लोक : शब्द संख्या- 3215, तिथि: 06 दिसम्बर 2020

924. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 12 दिसम्बर 2020

925. घरक खर्च- शब्द संख्या: 3731, तिथि: 19 दिसम्बर 2020

926. समाजक भागे- शब्द संख्या: 3338, तिथि: 25 दिसम्बर 2020

927. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या: 4091, तिथि: 02 जनवरी 2021

928. परिवारक विघटन- शब्द संख्या: 2143, तिथि: 07 जनवरी 2021

929. हारल विचार- शब्द संख्या: 3657, तिथि: 14 जनवरी 2021

930. मोड़पर- एक : शब्द संख्या: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021

931. मोड़पर- दू : शब्द संख्या: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021

932. मोड़पर- तीन : शब्द संख्या: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021

933. मोड़पर- चारि : शब्द संख्या: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021

934. मोड़पर- पाँच : शब्द संख्या: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021

935. मोड़पर- छह : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021

936. मोड़पर- सात : शब्द संख्या: 788, तिथि: 11 मार्च 2021

937. मोड़पर- आठ : शब्द संख्या: 927, तिथि: 12 मार्च 2021

938. मोड़पर- नअ : शब्द संख्या: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021

939. मोड़पर- दस : शब्द संख्या: 585, तिथि: 15 मार्च 2021

940. मोड़पर- एगारह : शब्द संख्या: 265, तिथि: 16 मार्च 2021

941. संकल्प- एक : शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021

942. संकल्प- दू : शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021

943. संकल्प- तीन : शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021

944. संकल्प- चारि : शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021

945. संकल्प- पाँच : शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021

946. संकल्प- छह : शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021

947. संकल्प- सात : शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021

948. संकल्प- आठ : शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021

949. संकल्प- नअ : शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021

950. संकल्प- दस : शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021

951. अन्तिम क्षण- एक : शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021

952. अन्तिम क्षण- दू : शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021

953. अन्तिम क्षण- तीन : शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021

954. अन्तिम क्षण- चारि : शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021

955. अन्तिम क्षण- पाँच : शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021

956. परिवारे गजपटा गेल : शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021

957. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021

958. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021

959. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021

960. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021

961. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021

962. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021

963. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021

964. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021

965. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021

966. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021

967. कुण्ठा- एक : शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021

968. कुण्ठा- दू : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021

969. कुण्ठा- तीन : शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021

970. कुण्ठा- चारि : शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021

971. कुण्ठा- पाँच : शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

972. कुण्ठा- छह : शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021

973. कुण्ठा- सात : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

974. कुण्ठा- आठ : शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021

975. कुण्ठा- नअ : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021

976. कुण्ठा- दस : शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021

977. सुदृढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर 2021

978. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या: 2369, तिथि: 05 दिसम्बर 2021

979. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या: 2191, तिथि: 10 दिसम्बर 2021

980. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या: 2893, तिथि: 16 दिसम्बर 2021

981. घरैया मूस- शब्द संख्या: 2791, तिथि: 22 दिसम्बर 2021

982. टुटि कऽ खसि पड़लैन- शब्द संख्या: 2182, तिथि: 29 दिसम्बर 2021

983. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति. : 03 जनवरी 2022

984. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022

985. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022

986. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022

987. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022

988. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022

989. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022

990. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022

991. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022

992. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022

993. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022

994. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022

995. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022

996. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

997. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022

998. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022

999. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022

1000. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022

1001. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022

1002. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022

1003. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022

1004. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022

995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022

1006. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022

1007. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022

1008. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022

1009. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022

1010. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022

1011. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022

1012. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022

1013. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022

1014. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022

1015. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022

1016. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022

1017. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022

1018. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022

1019. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022

1020. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022

1021. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

1022. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022

1023. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022

1024. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022

1025. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022

1026. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022

1027. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022

1028. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022

1029. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022

1030. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022

1031. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1032. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1033. कनियेँ-मनियेँ पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022

1034. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022

1035. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022

1036. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022

1037. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022

1038. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022

1039. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022

1040. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022

1041. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022

1042. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022

1043. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022

1044. जिनगीकेँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022

1045. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022

1046. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022

1047. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022

1048. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022

1049. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022

1050. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022

1051. ओसचट बीमारी : शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022

1052. पुत्र परीक्षा : शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022

1053. अप्पन मन बुझाएब- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022

1054. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022

1055. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022

1057. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022

1058. नब बनक नब फल- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022

1059. सुमारक- शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022

1060. अन्तिम भेँट- शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022

1061. अनहरिया- शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022

1062. निरन्तर- शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022

1063. शॉर्टकट रास्ता- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 26 दिसम्बर 2022

1064. अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022

1065. सुनयना बेटी : 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023

1066. सुनयना बेटी : 02- शब्द संख्या: 3540, तिथि: 14 जनवरी 2023

1067. सुनयना बेटी : 03- शब्द संख्या: 3722, तिथि: 25 जनवरी 2023

1068. सुनयना बेटी : 04- शब्द संख्या: 1987, तिथि: 30 जनवरी 2023

1069. सुनयना बेटी : 05- शब्द संख्या: 3802, तिथि: 06 फरवरी 2023

1070. सुनयना बेटी : 06- शब्द संख्या: 1821, तिथि: 10 फरवरी 2023

1071. सुनयना बेटी : 07- शब्द संख्या: 925, तिथि: 12 फरवरी 2023

1072. सुनयना बेटी : 08- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 18 फरवरी 2023

1073. सुनयना बेटी : 19- शब्द संख्या: 1926, तिथि: 22 फरवरी 2023

1074. सुनयना बेटी : 10- शब्द संख्या: 1953, तिथि: 26 फरवरी 2023

1075. आब नइ जीब- शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023

1076. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- शब्द संख्या: 2013, तिथि: 06 मार्च 2023

1077. धुरफन्ना लोक- शब्द संख्या: 1891, तिथि: 10 मार्च 2023

1078. घरदेखी- शब्द संख्या: 1846, तिथि: 14 मार्च 2023

1079. बासभूमि- शब्द संख्या: 2639, तिथि: 31 मार्च 2023

1080. इज्जत पर पड़ि गेल- शब्द संख्या: 2698, तिथि: 07 अप्रैल 2023

1081. अहीं जीतलौं- शब्द संख्या: 2884, तिथि: 13 अप्रैल 2023

1082. गामसँ गाए उपैट गेल- शब्द संख्या: 2454, तिथि: 20 अप्रैल 2023

1083. भारक बड़बड़िया- शब्द संख्या: 1727, तिथि: 24 अप्रैल 2023

1084. रूपैँ बदैल गेल- शब्द संख्या: 1736, तिथि: 28 अप्रैल 2023

1085. वंशक धर्म- शब्द संख्या: 1881, तिथि: 02 मई 2023

1086. उपराग- शब्द संख्या: 1358, तिथि: 05 मई 2023

1087. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ- शब्द संख्या: 1390, तिथि: 08 मई 2023

1088. खीरा लत्तीमे रोजगार- शब्द संख्या: 1377, तिथि: 11 मई 2023

1089. टकुआटान- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 19 मई 2023

1090. पोस्टमार्टम- शब्द संख्या: 1852, तिथि: 23 मई 2023

1091. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल- शब्द संख्या: 1761, तिथि: 27 मई 2023

1092. सामंजस्य- शब्द संख्या: 1868, तिथि: 01 जून 2023

1093. महींसवारक गाम- शब्द संख्या: 1337, तिथि: 04 जून 2023

1094. दसअना छहअना- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 07 जून 2023

1095. वाह रे हम- शब्द संख्या: 1291, तिथि: 10 जून 2023

1096. एक जूम तमाकुल- शब्द संख्या: 1290, तिथि: 13 जून 2023

1097. चपरासी गाम- शब्द संख्या: 1201, तिथि: 17 जून 2023

1098. बनरफाँस- शब्द संख्या: 1279, तिथि: 19 जून 2023

1099. हँस्सा ठक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 26 जून 2023

1100. विश्वासू मन- शब्द संख्या: 1724, तिथि: 30 जून 2023

1101. चोरनी पिल्ली- शब्द संख्या: 1883, तिथि: 04 जुलाई 2023

1102. गामक जमीने पथरा गेल- शब्द संख्या: 1837, तिथि: 08 जुलाई 2023

1103. एकलव्यपन- शब्द संख्या: 2087, तिथि: 14 जुलाई 2023

1104. केलहा साफल- शब्द संख्या: 2102, तिथि: 19 जुलाई 2023

1105. त्रिशुलपर लटकल गाम- शब्द संख्या: 2007, तिथि: 23 जुलाई 2023

1106. त्रिशंकु गाम- शब्द संख्या: 2151, तिथि: 28 जुलाई 2023

1107. चारिम कनियाँ- शब्द संख्या: 1995, तिथि: 01 अगस्त 2023

1108. वंश नाश- शब्द संख्या: 1988, तिथि: 06 अगस्त 2023

1109. लोक लाज- शब्द संख्या: 1781, तिथि : 10 अगस्त 2023

1110. धानक कमठौन- शब्द संख्या: 1580, तिथि : 30 अगस्त 2023

1111. एक चुटकी खुशी- शब्द संख्या: 2053, तिथि : 02 सितम्बर 2023

1112. अनका सिर- शब्द संख्या: 1801, तिथि: शिक्षक दिसव 2023

1113. समयक फेड़- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 08 सितम्बर 2023

1114. कोढ़ि- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 11 सितम्बर 2023

1115. मुहाँ-ठुठ्ठी- शब्द संख्या: 1167, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1116. औनाकऽ मरए लगलौं- शब्द संख्या: 1060, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1117. जेहेन आँखि तेहेन पाँखि- शब्द संख्या: 1077, तिथि: 17 सितम्बर 2023

1118. चौरचनक केरा- शब्द संख्या: 1185, तिथि: 19 सितम्बर 2023

1119. सुख-दुख- शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023

1120. दुख-सुख- शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023

1121. जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की- श. सं.: 1571, ति.: 10 अक्टूबर 2023

1122. अंधविश्वास- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023

1123. बखेरिया लोक- शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023

1124. नव जीवन- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1125. प्रीति- शब्द संख्या: 1610, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1126. पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023

1127. मन टँगि गेल- शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023

1128. नियति आ पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023

1129. जे ननू से गर्भहि ननू- शब्द संख्या: 1639, तिथि: 03 नवम्बर 2023

1130. पुरुखक डीह- शब्द संख्या: 1666, तिथि: 06 नवम्बर 2023

1131. पाशापर- शब्द संख्या: 1707, तिथि: 09 नवम्बर 2023

1132. संचरण- शब्द संख्या: 1743, तिथि: 14 नवम्बर 2023

1133. कंजूस- शब्द संख्या: 1636, तिथि: 17 नवम्बर 2023

1134. बाबाक पौती- शब्द संख्या: 1640, तिथि: 20 नवम्बर 2023

1135. भँसिया गेलौं- शब्द संख्या: 1614, तिथि: 23 नवम्बर 2023

1136. उबारि देलौं- शब्द संख्या: 1645, तिथि: 28 नवम्बर 2023

1137. श्रद्धा- शब्द संख्या: 1619, तिथि: 01 दिसम्बर 2023

1138. केकरोपर आश्रित- शब्द संख्या: 1641, तिथि: 04 दिसम्बर 2023

1139. समैया लुच्चा- शब्द संख्या: 1735, तिथि: 07 दिसम्बर 2023

1140. उकडू समयमे सुकडू काज: शब्द संख्या: 1737, तिथि: 10 दिसम्बर 2023

1141. मुक्ति: जारी...

❑❑❑

❑❑

❑

Notes